Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री लक्ष्मीनारायणहृदयस्तोत्रम्

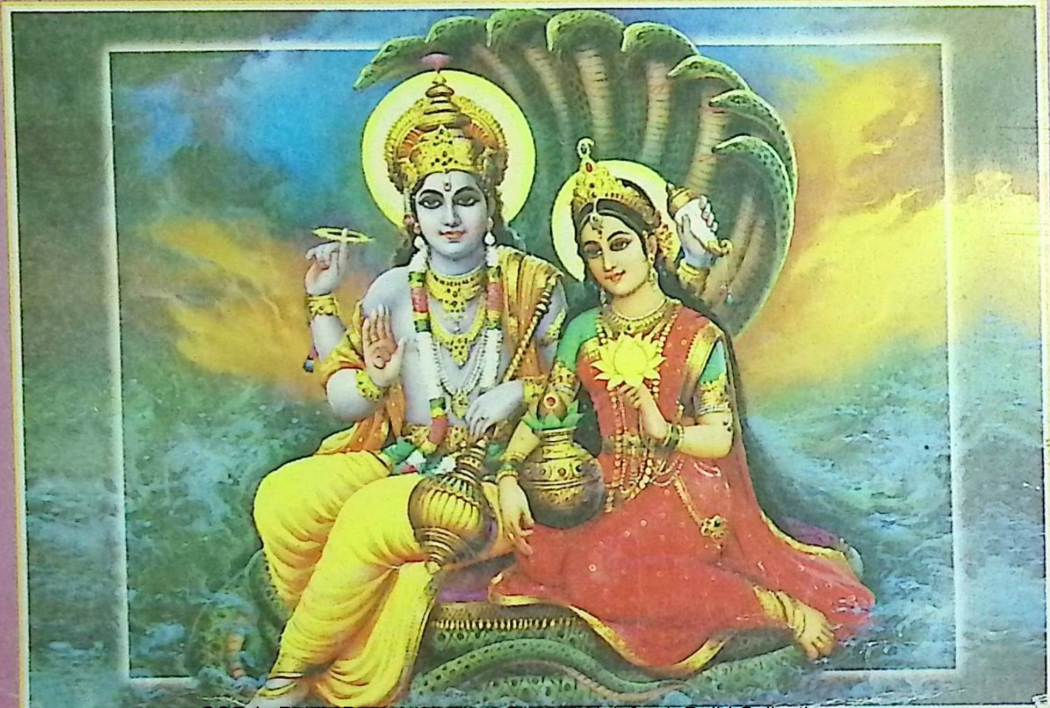

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीसूक्त

दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिए ऋषियों ने अनेक प्राकर के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ठ- श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिए मंत्र हैं। वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र श्री वेणीराम गौड़) ने इन मंत्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिए मंत्र, कुबेर पूजन व श्रीयंत्र व उसकी पूजनविधि आदि भी पुस्तक में सम्मिलित कर दिये हैं, जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

डाक व्यय अलग

प्रत्येक पुस्तक के साथ पूजा के लिए रंगीन श्रीयंत्र मुफ्त संलग्न है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मीनारायणहृदयस्तोत्रम्

(लक्ष्मीनारायणहृदयस्तोत्र, एक-चतुर-दश-द्वादश-सप्तविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रपुरश्चरणादिप्रयोग व भाषाटीका सहितम्)

सम्पादकः

स्व० पं० प्रेमदत्तशास्त्री

संस्थापकः-

वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल साङ्गवेद विद्यालयः, नजफगढ़, नई दिल्ली-११००४३ ।

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशकः

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४ दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

दूरभाषः-२३२७ ५३४४

सम्पादक	:	स्व० पं० प्रेमदत्तशास्त्री ग्रा०-जहाँगीराबाद, जि०- बुलन्दशहर, उ०प्र०
सर्वाधिकार	:	© प्रकाशकाधीन
प्रथमावृत्ति	:	जुलाई, सन् २००६
मूल्य	:	रु० २५.०० डाक व्यय पृथक्

शिवनाथ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका

सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति । इस कथन के अनुसार आज-कल लोगों का मानना है कि धन से ही मनुष्य श्रेष्ठ और गुणवान् माना जाता है । परमेश्वर की कृपा से ही धन मिलता है । इसलिए प्रायः सभी लोग लक्ष्मी की उपासना करते हैं परन्तु लक्ष्मी जी श्रीमन्नारायण की सेवा में लगी रहती हैं । नारायण के विना लक्ष्मी की कृपा संभव नहीं है । इसलिए लक्ष्मी जी की श्रीमन्नारायण के सहित पूजा-अर्चना करनी चाहिए ।

लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू अमंगल या अन्धकार का सूचक है, जो मदान्ध करके व्यक्ति को कुमार्गगामी बना देता है । श्रीमन्नारायण का वाहन गरुड शुभ एवं सुमंगल का सूचक है । नारायण के सहित लक्ष्मी की उपासना करने वाला व्यक्ति कभी भी कुमार्ग की ओर प्रवृत्त नहीं हो सकता । इसलिए लक्ष्मी नारायण की उपसना से धन के साथ-साथ सुख-शान्ति भी प्राप्त होती है । अतः सभी को सुख, शान्ति व समृद्धि के लिए लक्ष्मी और नारायण दोनों की समर्चना करनी चाहिए ।

प्रस्तुत पुस्तक में श्रीलक्ष्मीनारायणहृदयस्तोत्र (भाषाटीका सहित) पूजा व पाठ विधि सहित दिया गया है । शारदा तिलक तन्त्र में वर्णित लक्ष्मी व नारायण के अनेक मन्त्रों के जप व पूजा प्रयोग दिये गये हैं । मन्त्रों के साथ उनके विनियोग, न्यास, ध्यान तथा यन्त्र में आवरण पूजा सहित जप, पुरश्चरण विधि भी दी गयी है । **न्यास** का अर्थ है स्थापना अर्थात् अपने शरीर के अंगों में अभीष्ट देवताओं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

का स्थापन करना । **देवो भूत्वा देवं यजेत्** अर्थात् स्वयं भी देवमय होकर देवपूजा करनी चाहिए। इस प्रकार न्यास करने से शरीर के संपूर्ण अंगों में देवताओं का वास हो जाता है तथा ध्यान से आत्मा और देवता का एकीकरण होकर देवमय स्वरूप बनकर मन समाहित हो जाता है । इसी प्रकार विनियोग से मन्त्र में शक्ति आती है । इसके बिना पाठ या जप का पूर्ण फल नहीं मिलता है । इसलिए न्यास, ध्यान और विनियोग पूजा का आवश्यक अंग माना जाता है । इसके अतिरिक्त अंग और आवरण पूजा भी देवता की विशेष पूजा का आवश्यक अंग है । पुस्तक का स्वरूप विस्तृत होने के भय से सभी पूजा की विधियाँ संक्षेप में दी जा रही हैं । आशा है सभी आस्तिक जन हमारे इस लघु प्रयास से लाभान्वित होंगे ।

प्रूफ पठन व संशोधन कार्य में आचार्य श्री ध्रुव प्रसाद भट्टराई व आचार्य श्री बच्चा कुमार मिश्र का सहयोग सराहनीय है । पुनरपि शेष मुद्रणादि दोषों से अवगत कराने तथा उपयोगी सुझावों के लिए आपका स्वागत है ।

गौडवंशोद्भव-मिश्रोपाह्व-
कीर्त्तिकान्तः शर्म्मा

गुरुपूर्णिमा, संवत् २०६३
नजफगढ, नई दिल्ली

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनुक्रमणिका

विषयः	पृष्ठसंख्या
भूमिका	३
लक्ष्मीनारायणपूजनविधिः	६
लक्ष्मीहृदयस्तोत्रम्	१२
नारायणहृदयस्तोत्रम्	६३
मूलाष्टकम्	६४
प्रार्थनादशकम्	६८
लक्ष्मीमन्त्रानुष्ठानम्	७७
एकाक्षरचतुरक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः	७७
दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः	८७
द्वादशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः	९०
सप्तविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः	१००
नारायणमन्त्रानुष्ठानविधानम्	१०५
द्वादशाक्षरनारायणवासुदेवमन्त्रप्रयोगः	१०५
लक्ष्मीनारायणमन्त्रपुरश्चरणप्रयोगः	११३
लक्ष्मीकवचम्	११५
सद्यःफलदा लक्ष्मीस्तवहृदयम्	११९
लक्ष्मी के १०८ नाम	१२३
श्रीमन्नारायण के १०८ नाम	१२८
श्रीलक्ष्मीनारायण जी की आरती	१३३
पूजा सामग्री	१३५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ लक्ष्मीनारायणपूजनविधिः

प्रातः काल उठकर संन्ध्योपासनादि नित्य कर्म करने के पश्चात् अथवा शुभ मुहूर्त में सपत्नीक यजमान शुद्धवस्त्र धारण कर ऊन के आसन पर बैठकर, आचमन प्राणायामादि आत्मशुद्धि, आसनशुद्धि, शिखा बन्धन, दीप प्रज्वालन और स्वस्ति वाचनादि करके देशकालादि वर्ष, मास, तिथि, वार का स्मरण करते हुए हरिः ॐ तत्सद् विष्णुः-३ से आरम्भ कर **करिष्ये** तक पढ़कर संकल्प करे ।

संकल्पः हरिः ॐ तत्सद्विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महा-पुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे यमुनातटे इन्द्रप्रस्थे अमुकक्षेत्रे अमुकसंवत्सरे अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अद्य शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनाम शर्माऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य सकलदुरितदौर्भाग्य-दुःस्वप्नदैन्यप्रभृति सर्वविधकष्टनिवारणपूर्वकं सुखसौभाग्य-सन्तत्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादेन मनोऽभिलषितसकलकामनासंसिद्ध्यर्थम् अद्य प्रभृत्यमुकदिनपर्यन्तं सङ्कलीकरणरीत्या सम्पुटीकरणरीत्या पुरश्चरणरीत्या सकृदावर्तनपाठरीत्या वा श्रीलक्ष्मीनारायणहृदय-जपाख्यं कर्म करिष्ये ।

तत्पश्चात् शंख-घण्टा-दीप पूजन पूर्वक यथाशक्ति महागणपति, कलश, पुण्याहवाचन और मातृकाओं का विधिवत् पूजन तथा आचार्यादि वरण करें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चौकी पर पीत या श्वेतवस्त्र बाँध कर सर्वतोभद्र मण्डल बनावें। सर्वतोभद्र पीठ पर श्रीलक्ष्मीनारायण की प्रतिमा, चित्र, सुपारी या यन्त्र में श्रीलक्ष्मीनारायण का आवाहन और स्थापन करें। यदि श्रीलक्ष्मीनारायण की सुवर्ण प्रतिमा हो तो उसका अग्न्युत्तारण पूर्वक विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करें। यथाशक्ति श्रीसूक्त वा पुरुषसूक्त से विधिवत् षोडशोपचार या यथालब्धोपचार पूजन तथा पीठ एवं आवरणपूजा[१] करके निम्न प्रकार से विनियोग एवं न्यास करें।

विनियोगः **अस्य श्री महालक्ष्मीहृदयमालामन्त्रस्य ॥ भार्गव ऋषिः॥ आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीर्देवता ॥ अनुष्टुबादि नानाछन्दांसि ॥ श्रीर्बीजम्॥ ह्रीं शक्तिः ॥ ऐं कीलकम् ॥ श्रीमहालक्ष्मीप्रसाद सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥**

१-पीठ एवं आवरणपूजा पृष्ठ संख्या ९५पर देखें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अंगन्यासः

ॐ भार्गवऋषये नमः शिरसि ॥ दक्षिण हाथ से शिर स्पर्श करें ।
ॐ अनुष्टुबादिनानाछन्दोभ्यो नमो मुखे ॥ द० हाथ से मुख स्पर्श करें।
ॐ आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीदेवतायै नमो हृदये ॥ द० हाथ से हृदय स्पर्श करें ।
ॐ श्रीं बीजाय नमो गुह्ये ॥ द० हाथ से गुदा स्पर्श करें ।
ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ द० हाथ से पाद स्पर्श करें ।
ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ॥ द० हाथ से सर्वांग स्पर्श करें ।

करन्यासः

ॐ श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ दोनों अंगुष्ठ का स्पर्श करें ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ दोनों तर्जनियों का स्पर्श करें ।
ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ॥ दोनों मध्यमाओं का स्पर्श करें ।
ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ दोनों अनामिकाओं का स्पर्श करें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ दोनों कनिष्ठिकाओं का स्पर्श करें ।
ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ दोनों हथेलियों और पृष्ठ का स्पर्श करें ।

हृदयन्यासः

ॐ श्रीं हृदयाय नमः ॥ दक्षिण हाथ से हृदय का स्पर्श करें ।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ दक्षिण हाथ से शिर का स्पर्श करें ।
ॐ ऐं शिखायै वषट् ॥ दक्षिण हाथ से शिखा का स्पर्श करें ।
ॐ श्रीं कवचाय हुम् ॥ दोनों हाथों से दोनों भुजाओं का स्पर्श करें ।
ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ दक्षिण हाथ से दोनों नेत्रों का स्पर्श करें ।
ॐ ऐं अस्त्राय फट् ॥ द० हाथ शिर के ऊपर घुमाकर तालध्वनि करें।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं इति दिग्बन्धः ॥ द० हाथ से चारों दिशा में चुटकी बजाऐं ।

ध्यानम् हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया ।
हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार न्यास एवं ध्यान कर मानसोपचार से पूजा करें ।

शंखचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनी ।
मम देहि वरं लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥

इससे प्रार्थना करें ।

मन्त्रः **ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा**

इस मन्त्र का जप करके पुनः पूर्ववत् हृदयादि षडङ्गन्यास करके स्तोत्र पाठ करें ।

॥ संक्षिप्तपूजाविधिः संपूर्णः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ लक्ष्मीहृदयस्तोत्रम्

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां,
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधाना-
माद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥ १ ॥

परम कल्याणमयी, शुद्ध सोने के समान कान्तिवाली, तेजः स्वरूप, पीतवस्त्र तथा सभी आभूषणों से सुसज्जित अंगवाली, बिजौरा नीबू के समान सुवर्ण कलश तथा पीतकमल धारण करने वाली विष्णु के वाम भाग में स्थित तथा सम्पूर्ण संसार को उत्पन्न करने वाली आद्याशक्ति महालक्ष्मी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् ।
सर्वकामफलावाप्तिसाधनैकसुखावहाम् ॥ २ ॥

श्रीयुक्त सौभाग्य की जननी, समस्त इच्छित फल की प्राप्ति रूप सुख साधनों को देने वाली सनातनी लक्ष्मी की स्तुति करता हूँ ॥ २ ॥

स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसः ।
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम् ॥ ३ ॥

हे देवेशि! आपके द्वारा मेरे हृदय में जैसी प्रेरणा दी गई है, उसी प्रकार आपकी आज्ञा शिरोधार्य कर आप का स्मरण व भजन करता हूँ ॥ ३ ॥

समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं
समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।
समस्त कल्याणकरीं महाश्रियं
भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समस्त सम्पत्ति सुख देने वाली, सभी सौभाग्य को देने वाली, समस्त कल्याण करने वाली, मोक्ष साधन ज्ञान देने वाली महालक्ष्मी का मैं भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं
विचित्रवाग्भूतिकरीं मनोहराम् ।
अनन्तसम्मोदसुखप्रदायिनीं
नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम् ॥ ५ ॥

मोक्ष साधन स्वरूप शाश्वत ज्ञान, सम्पत्ति और सुख को देने वाली, विचित्र प्रकार के मनोहर आनन्द युक्त शास्त्रीय तथा लौकिक ज्ञाननिधि को देने वाली, अनन्त प्रकार के आनन्द और सुख-सम्पत्ति को देने वाली, ऐसी सुख-सम्पत्ति तथा ज्ञानराशि प्रदान करने वाली हरिप्रिया को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समस्तभूतान्तरसंस्थिता त्वं
समस्तभोक्त्रीश्वरि विश्वरूपे ।
तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु
त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ६ ॥

हे सम्पूर्ण भोग की स्वामिनी, विश्वरूपे लक्ष्मी! आप समस्त चराचर जगत् के हृदय में वास करने वाली हैं, इसलिए आपसे भिन्न कोई वस्तु नहीं है। अतः आपके चरण कमलों में नमस्कार करता हूँ ॥ ६ ॥

दारिद्र्यदुःखौघतमोपहन्त्रि
त्वत्पादपद्मं मयिसन्निधत्स्व ।
दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः
कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः ॥ ७ ॥

हे दारिद्र्य दुःखस्वरूप गहन अन्धकार को दूर करने वाली! आपके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चरणकमल मेरे हृदय में निवास करें एवं दीनार्तों के दुःख नाश करने वाली कृपादृष्टि से मुझे देखिये ॥ ७ ॥

अम्ब प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या
मान्त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमं कुरुष्व ।
आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहन्त्रि
त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ८ ॥

हे अम्बे! प्रसन्न होकर करुणामृतमयी दृष्टि से देखिये और मुझे अपने कृपारूपी धन का घर बनाइये। हे भक्तों के हार्दिक शोक को हरने वाली! मेरे हृदय में आनन्द का प्रकाश करिये। मैं आपके चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै
कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै
धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै ॥ ९ ॥

शरणागत की रक्षा करने वाली 'शान्तिदेवी' को नमस्कार है। श्रेष्ठगुण युक्त 'कान्तिदेवी' को नमस्कार है। पापनाशिनी 'क्षान्तिदेवी' को नमस्कार है। धन-धान्य की समृद्धि दायिनी 'धात्रीदेवी' को नमस्कार है ॥ ९ ॥

शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै
रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै ।
भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारिकायै
मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै ॥ १० ॥

जिसकी चन्द्रशेखर महादेव स्तुति करते हैं, ऐसी 'शक्ति' को नमस्कार है। चन्द्रमा की भगिनी 'रति' को नमस्कार है। संसार सागर से उद्धार करने वाली भक्ति को नमस्कार है। मधुसूदन भगवान की प्यारी 'मति' को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्कार है ॥ १० ॥

लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै
सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धसुपूजितायै ।
धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै
गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायकायै ॥ ११ ॥

कल्याणकारी लक्षणयुक्त 'लक्ष्मी' को नमस्कार है। शिवादि सिद्ध पूजित 'सिद्धि' को नमस्कार है। अमित दुर्गति का नाश करने वाली 'धृति' को नमस्कार है। वर तथा सद्गति देने वाली 'गति' को नमस्कार है ॥ ११ ॥

देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै
भूत्यै नमोऽस्तु भुवनार्तिविनाशनायै ।
दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्पूर्ण देवताओं से पूजित 'देव' को नमस्कार है। संसारिक दुःखों की विनाशिनी 'भूति' को नमस्कार है। धरणीधर भगवान की प्यारी 'दात्री' को नमस्कार है। पुरुषोत्तम प्रिया 'पुष्टि' को नमस्कार है ॥ १२ ॥

सुतीव्रदारिद्र्यविदुःखहन्त्र्यै
नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै ।
श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै
नमो नमः सर्वविभूतिदायै ॥ १३ ॥

महान् दारिद्र्यरूपी दुःख का नाश करने वाली, सम्पूर्ण भय को दूर करने वाली, विष्णु भगवान के हृदय में वास करने वाली तथा सभी सम्पत्ति को देने वाली 'लक्ष्मी' को बारम्बार नमस्कार है ॥ १३ ॥

जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृताङ्गी
जयतु जयतु पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जयतु जयतु विद्या विष्णुवामाङ्कसंस्था
जयतु जयतु सम्यक्सर्वसम्पत्करी श्रीः ॥ १४ ॥

शुभ लक्षणों से अलंकृत अंगों वाली 'लक्ष्मी' की जय हो। कमलवासिनी वन्दनीया 'पद्मा' की जय हो। विष्णु भगवान के वाम भाग में स्थित 'विद्या' की जय हो। सर्वविध सम्पत्ति देने वाली 'श्री'(लक्ष्मी) की जय हो ॥१४॥

जयतु जयतु देवी देवसङ्घाभिपूज्या
जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा ।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या
जयतु जयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था ॥ १५ ॥

देव समूह से पूजित 'देवी' की जय हो। सौभाग्यरूपा भार्गवी 'भद्रा' की जय हो। निर्मल ज्ञान से जानने योग्य 'नित्या' की जय हो। सभी प्राणियों के अन्तःकरण में वास करने वाली 'सत्या' की जय हो ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जयतु जयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था
जयतु जयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा ।
जयतु जयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी
जयतु जयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये ॥ १६ ॥

रत्नगर्भा भूमि में स्थित 'रम्या' की जय हो । शुद्ध स्वर्ण सदृश कान्ति वाली 'शुद्धा' की जय हो । दीप्यमान कान्तिवाली 'कान्ता' की जय हो तथा शान्ता की जय हो । हे सौम्यरूपा लक्ष्मी! मेरे पास जल्दी आओ ॥ १६ ॥

यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्या
रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः ।
जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः
प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते ॥ १७ ॥

वे पूर्णायु वाले ब्रह्मा, रुद्र तथा इन्द्रादि देवता और सभी जीवन्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शक्तियाँ जिसकी कलाओं से सामर्थ्य को प्राप्त हुई हैं वह महालक्ष्मी मेरे समीप आओ ॥१७॥

लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं
त्वया विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये ।
तदन्तरफले स्फुटं कमलवासिनी श्रीरिमां
समर्पय समुद्रिकां सकलभाग्यसंसूचिकाम् ॥ १८ ॥

हे कमलवासिनी लक्ष्मी! विधाता ने मेरे ललाट में जो दुर्भाग्य का लेख लिखा है, उसको हटाकर तुम्हें जैसा लिखना चाहिए वैसा शुभ फल पाने के लिए, विधाता का लिखा फल भोगने से पहले ही सकल सौभाग्य सूचक स्पष्ट रूप से आपकी मुहर लगा हुआ लेख मुझे दीजिये ॥ १८ ॥

कलया ते यथा देवि जीवन्ति सचराचराः ।
तथा सम्पत्करे लक्ष्मीः सर्वदा सम्प्रसीद मे ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे सम्पत्ति देने वाली लक्ष्मी! जिस प्रकार तुम्हारी कला धारण कर चराचर संसार जीवित है, उसी तरह मुझ पर सदा प्रसन्न रहो ॥ १९ ॥

यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्वकलां संन्यवेशयत् ।
तथैव स्वकलां लक्ष्मी मयि सम्यक् समर्पय ॥ २० ॥

हे लक्ष्मी! जैसे विष्णु जी ने अपनी कला (शक्ति) ध्रुव में स्थापित की है, उसी प्रकार अपनी कला मुझमें अच्छी तरह स्थापित करो ॥ २० ॥

सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे ।
अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम् ॥ २१ ॥

भक्तों को अभय तथा सर्व-सौख्य देने वाली देवी! मुझ में स्थापित की हुई अपनी कला को यत्नपूर्वक अचल कर दीजिये ॥ २१ ॥

मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला,
सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसेत्सत्ये लोके मम वचसि लक्ष्मीर्वरकला,
श्रियः श्वेतद्वीपे निवसतु कला मेऽस्तु करयोः ॥ २२ ॥

मेरे ललाट में परमपद देने वाली स्फुटकला लक्ष्मी का एवं मेरे नेत्रों में सदा वैकुण्ठवासिनी कला लक्ष्मी तथा वाणी में सत्यलोक निवासिनी वरकला लक्ष्मी एवं मेरे हाथों में श्वेतद्वीपवासिनी लक्ष्मी की कला का वास हो ॥ २२ ॥

तावन्नित्यं ममाङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत् ।
सूर्याचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मी पतिः श्रिया ॥ २३ ॥

जब तक भगवान विष्णु क्षीर-समुद्र में लक्ष्मी के साथ निवास करते हैं, तथा सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति जब तक हैं, तब तक मेरी आत्मा में तुम्हारी लक्ष्मीरूपा कला स्थित रहे ॥ २३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वमङ्गलसम्पूर्णा सर्वैश्वर्यसमन्विता ।
आद्यादिश्रीर्महालक्ष्मीस्त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥ २४ ॥

हे महालक्ष्मी! सर्व मंगलयुक्त तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्य सहित जगत की आदि कारण तेरी कला मुझमें स्थित हो ॥ २४ ॥

अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका ।
सर्वैश्वर्यप्रदा मेऽस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता ॥ २५ ॥

हे लक्ष्मी! विशुद्ध ज्ञान का प्रकाश करने वाली सम्पूर्ण ऐश्वर्य देने वाली आपकी कला मेरे अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करने के लिए मुझमें स्थिर रहे ॥ २५ ॥

अलक्ष्मीं हरतु क्षिप्रं तमः सूर्यप्रभा यथा ।
वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता ॥ २६ ॥

हे लक्ष्मी! मुझ में स्थित हुई तुम्हारी कला सूर्य के प्रकाश के समान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरे दरिद्रान्धकार को दूर करके कल्याण-रूप प्रकाश फैलावे ॥ २६ ॥

ऐश्वर्यमङ्गलोत्पत्तिः त्वत्कलायां निधीयते ।
मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव ॥ २७ ॥

हे लक्ष्मी ! आपकी कला ऐश्वर्य और मंगल की उत्पत्ति का कारण है। अतः आपकी स्थिति का योग्य पात्र होने के कारण मैं कृतार्थ हो गया हूँ ॥ २७ ॥

भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि।
त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोऽस्तु ते ॥ २८ ॥

हे भार्गवि! मैं आपका कृपापात्र हूँ, अतः मैं भाग्यवान् हूँ। आपकी कृपा से मैं पवित्र हो गया हूँ। हे लोकमाता! तुम्हें नमस्कार है ॥ २८ ॥

पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मा-
दतः समागच्छ ममाग्रतस्त्वम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परं पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना
मय्यच्युतेन प्रविशादिलक्ष्मीः ॥ २९ ॥

हे लक्ष्मी! जबकि आप अपनी कला से ही मुझे पवित्र कर सकती हो तब अवश्य मेरे यहाँ आओ और परम शक्ति स्वरूपा आदि लक्ष्मी विष्णु भगवान सहित मुझमें वास करो ॥ २९ ॥

श्रीवैकुण्ठस्थितेलक्ष्मीः समागच्छ ममाग्रतः ।
नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्यावलोकय ॥ ३० ॥

हे वैकुण्ठलोक में रहने वाली लक्ष्मी! मेरे समीप आओ और मुझ पर नारायण सहित अपनी कृपादृष्टि करो ॥ ३० ॥

सत्यलोकस्थिते लक्ष्मीस्त्वं ममागच्छसन्निधिम् ।
वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ॥ ३१ ॥

हे सत्यलोक में रहने वाली लक्ष्मी! तुम वासुदेव के सहित मेरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
सन्निधि आओ और प्रसन्न होकर मुझे वरदान करो ॥ ३१ ॥

श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मीः शीघ्रमागच्छ सुव्रते ।
विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे ॥ ३२ ॥

हे श्वेत द्वीप में वसने वाली सुव्रते लक्ष्मी! शीघ्र यहाँ आओ और हे जगन्मातः! भगवान् विष्णु के साथ आकर मुझ पर प्रसन्न होइये ॥ ३२ ॥

क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मीः समागच्छ समाधवे ।
त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय ॥ ३३ ॥

हे क्षीरसागर में वसने वाली लक्ष्मी! आप माधव सहित आओ और निरन्तर अमृतमयी अपनी कृपादृष्टि से मुझे देखो ॥ ३३ ॥

रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मीः परिपूर्णहिरण्मयि ।
समागच्छ समागच्छ स्थित्वाशु पुरतो मम ॥ ३४ ॥

हिरण्य से परिपूर्ण रत्नों वाले स्थान में रहने वाली लक्ष्मी! शीघ्र मेरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यहाँ आकर स्थिर हो जाओ ॥ ३४ ॥

स्थिरा भव महालक्ष्मीः निश्चला भव निर्मले ।
प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव ॥ ३५॥

महालक्ष्मी! आप स्थिर होओ, हे निर्मलरूपे! निश्चल हो एवं प्रसन्न कमले देवि ! प्रसन्न हृदय वाली होकर कृपा करो ॥ ३५ ॥

श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्तःस्थं महानिधिम् ।
शीघ्रमुद्धृत्य पुरतः प्रदर्शय समर्पय ॥ ३६ ॥

श्रीधर श्रीमहाभूत स्वरूप पृथिवी रूपा हे लक्ष्मी! अपने में स्थित महानिधि को उठाकर दिखाओ, और मुझे प्रदान करो ॥ ३६ ॥

वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्धि कृपामयि ।
त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे सम्प्रदर्शय ॥ ३७ ॥

धनरूपी दूध दुहने वाली वसुन्धरे श्रीवसुधे देवि! मुझ पर कृपा करके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
अपनी कुक्षि में स्थित सम्पूर्ण रत्नादि धनराशि को मुझे दिखाओ ॥ ३७ ॥

विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे ।
त्वद्गर्भगतहेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय ॥ ३८ ॥

हे समस्त शुभ फल देने वाली विष्णुप्रिया, रत्नगर्भा, कल्याणकारिणी देवि! आप अपने गर्भ में स्थित सुवर्ण आदि रत्नों को अच्छी तरह मुझे दिखाओ ॥ ३८ ॥

रसातलगते लक्ष्मीः शीघ्रमागच्छ मे पुरः ।
न जाने परमं रूपं मातर्मे सम्प्रदर्शय ॥ ३९॥

हे रसातल (भूगर्भ में) में रहने वाली लक्ष्मी! शीघ्र मेरे सम्मुख आओ। मैं आपके परम रूप को पहचान नहीं सकता । इसलिए हे मातः! मुझे अपने दर्शन कराओ ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः।
मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम् ॥ ४० ॥

हे लक्ष्मी! मनोवेग से प्रकट होकर शीघ्र मेरे सम्मुख आओ "हे वत्स! डरो मत" ऐसा कहकर बछड़े को चाहने वाली गाय के समान मेरी रक्षा करो ॥ ४० ॥

देवि शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते ।
मातस्त्वद्भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात् ॥ ४१ ॥

पृथ्वी के गर्भ में रत्नरूप में रहने वाली हे देवि! शीघ्र मेरे यहाँ आओ। हे मातः ! मैं आपका दासानुदास हूँ। बड़ी उत्सुकता से आपको खोज रहा हूँ ॥ ४१ ॥

उत्तिष्ठ जागृहि त्वं मे समुतिष्ठ सुजागृहि ।
अक्षयान् हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान् ॥ ४२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे देवि! शीघ्र उठो, जागो! कभी खाली न होने वाले सुवर्ण से परिपूर्ण स्वर्ण कलशों को ॥ ४२ ॥

निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः ।
समुन्नताननना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात् ॥ ४३ ॥

भूमि के गर्भ से निकाल कर और उठाकर प्रसन्न चित्त से मेरे सामने रख दो ॥ ४३ ॥

मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात् ।
प्रसीद श्रेयसां दोग्ध्रि लक्ष्मीर्मे नयनाग्रतः ॥ ४४ ॥

हे कल्याणकारिणी! मेरे ऊपर कृपा करके मेरे समीप आइये, प्रसन्न होकर मेरी आँखों के सामने रहिये ॥ ४४ ॥

अत्रोपविश लक्ष्मीस्त्वं स्थिरा भव हिरण्मयि ।
सुस्थिरा भव सम्प्रीत्या प्रसीद वरदा भव ॥ ४५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे लक्ष्मी! आप मेरे यहाँ बैठो और सुवर्ण रूप से स्थिर हो जाओ। प्रेमपूर्वक सुस्थिर होओ तथा प्रसन्न होकर वर दो ॥ ४५ ॥

आनीय त्वं तथा देवि निधीन्मे सम्प्रदर्शय ।
अद्य क्षणेन सहसा दत्वा संरक्ष मां सदा ॥ ४६ ॥

हे देवि! आप उस अपनी निधि को लाकर मुझे दिखाओ और आज ही तत्काल प्रदान करके सदा मेरी रक्षा करो ॥ ४६ ॥

मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि ।
अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मीर्नमोऽस्तु ते ॥ ४७ ॥

हे देवि! जैसे आप इन्द्रादि देवताओं के यहाँ रहती हो, उसी प्रकार मेरे घर में रहकर मुझे अभय करो। हे महालक्ष्मी! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥ ४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समागच्छ महालक्ष्मीः शुद्ध जाम्बूनदप्रभो ।
प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ॥ ४८ ।

शुद्ध सुवर्ण के समान कान्ति वाली हे महालक्ष्मी! आप यहाँ आकर मुझ पर प्रसन्न हो जाओ, और आपके सम्मुख विनत मुझको कृपादृष्टि से देखो ॥ ४८ ॥

लक्ष्मीर्भुवं गता भासि यत्र यत्र हिरण्मयी ।
तत्र तत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय ॥ ४९ ॥

हे लक्ष्मी! इस पृथ्वी पर जहाँ जहाँ सुवर्ण रूप में सुशोभित होती हो, वहाँ-वहाँ स्थित होकर तुम मुझे अपना कृपा स्वरूप दिखाओ ॥ ४९ ॥

क्रीडसे बहुधा भूमौ परिपूर्णा हिरण्मयी ।
मम मूर्धनि ते हस्तमविलंबितमर्पय ॥ ५० ॥

हे लक्ष्मी! इस पृथ्वी पर आप हिरण्य रूप में अनेक प्रकार से परिपूर्ण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होकर क्रीडा कर रही हो। अतः आप मेरे शिर पर शीघ्र अपना वरद हस्त रखो ॥ ५० ॥

फलद्भाग्योदये लक्ष्मीः समस्तपुरवासिनी ।
प्रसीद मे महालक्ष्मीः परिपूर्णमनोरथे ॥ ५१ ॥

हे भाग्योदय करने वाली लक्ष्मी! सम्पूर्ण नगरों में विराजमान एवं सबके मनोरथ पूर्ण करने वाली महालक्ष्मी! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ ॥ ५१ ॥

अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते ।
वैभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते ॥ ५२ ॥

हे धनबलयुते लक्ष्मी! जैसे आप अयोध्यादि समस्त नगरों में विराजमान हैं, उसी प्रकार अनेक वैभव से युक्त होकर मेरे यहाँ आओ ॥ ५२ ॥

समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा ।
करुणारसनिष्यन्दनेत्रद्वय विलासिनी ॥ ५३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे करुणारसयुक्त नयनों वाली महालक्ष्मी! यहाँ आओ और मेरे सम्मुख सुस्थिर हो जाओ ॥ ५३ ॥

संविधत्स्व महालक्ष्मीस्त्वप्ताणिं मम मस्तके ।
करुणासुधया मां त्वमभिषिंच स्थिरीकुरु ॥ ५४ ॥

हे लक्ष्मी! आप अपना वरद हस्त मेरे सिर पर रखिये । करुणामृत से मुझे अभिषिञ्चित करके मुझको स्थिरता प्रदान करो ॥ ५४ ॥

सर्वराजगृहे लक्ष्मीः समागच्छ मुदान्विते ।
स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयं कुरु ॥ ५५ ॥

हे राजभवनों में रहने वाली आनन्दयुक्ता लक्ष्मी! आओ और शीघ्र मेरे सम्मुख ठहरकर अपनी कृपा से मुझे अभय करो ॥ ५५ ॥

सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयार्पय ।
सर्व राजगृहे लक्ष्मीस्त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥ ५६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समस्त राजघरानों में सुशोभित होने वाली हे लक्ष्मी! कृपा करके मेरे शिर पर सादर अपना वरद हस्त रखो और तुम्हारी कला मेरे घर में वास करे ॥ ५६ ॥

आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीर्विष्णुवामाङ्कसंस्थिते ।
प्रत्यक्षं कुरु मे रुपं रक्ष मां शरणागतम् ॥ ५७ ॥

भगवान विष्णु के वाम भाग में रहने वाली हे आद्या शक्ति लक्ष्मी! आप अपने स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन करा करके मुझ शरणागत की रक्षा करें ॥ ५७ ॥

प्रसीद मे महालक्ष्मीः सुप्रसीद महाशिवे ।
अचला भव सम्प्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे ॥ ५८ ॥

हे महालक्ष्मी! आप मुझ पर प्रसन्न हों। हे कल्याणकारिणी ! आप अति प्रसन्न हों । स्नेहपूर्वक मेरे घर में अचल होकर सदा स्थिर रहो ॥ ५८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यावत्तिष्ठंति वेदाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति ।
यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि ॥ ५९ ॥

हे लक्ष्मी! जब तक संसार में वेद हैं तथा उनमें तुम्हारा नाम है, और जब तक विष्णु तथा आप हैं, तब तक मुझ पर अपनी कृपा करती रहें ॥ ५९ ॥

चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्धते सा दिने दिने ।
तथा दया ते मय्येव वर्धतामभिवर्धताम् ॥ ६० ॥

हे लक्ष्मी! जैसे चन्द्र की एक-एक कला शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन बढ़ती है, उसी प्रकार तुम्हारी कृपा मुझ पर प्रतिदिन बढ़ती ही रहे ॥ ६० ॥

यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे ।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ॥ ६१ ॥

हे लक्ष्मी! जैसे आप वैकुण्ठलोक तथा क्षीरसागर में रहती हो, वैसे ही मेरे यहाँ भी विष्णु के सहित स्थिर होकर निवास करो ॥ ६१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना ।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्री विष्णुना सह ॥ ६२ ॥

हे लक्ष्मी! जैसे आप विष्णु सहित योगियों के हृदय में नित्य निवास करती हो, वैसे ही मेरे घर में विष्णु के साथ स्थिर होकर वास करो ॥ ६२ ॥

नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते
नारायणोऽपि तव हृत्कमले यथास्ते ।
नारायणास्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव
तौ तिष्ठातां हृदि ममापि दयावति श्रीः ॥ ६३ ॥

हे दयामयी लक्ष्मी ! जैसे आप नारायण के हृदय में रहती हो और नारायण भी आपके हृदय में वसते हैं, उसी प्रकार नारायण और आप दोनों मेरे हृदय में नित्य निवास करो ॥ ६३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः
सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।
दयासुवृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः
सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥ ६४ ॥

हे लक्ष्मी! मेरे हृदय में ज्ञान तथा घर में श्रीवृद्धि करो । मेरे ऊपर दयावृद्धि तथा मेरे घर में सुवर्ण की वृद्धि करो ॥ ६४ ॥

न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि
सद्भक्तचिन्तामणिकामधेनो ।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना
गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥ ६५ ॥

हे लक्ष्मी! भक्त के लिए कल्पवृक्ष, चिन्तामणि एवं कामधेनु समान हैं। ऐसी हे लक्ष्मी! मेरा कभी त्याग नहीं करना । आप जगज्जननी हैं, मेरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्त्री, पुत्र और घर पर सदा प्रसन्न रहना ॥ ६५ ॥

आद्यादिमाये त्वमजाण्डबीजं
त्वमेव साकारनिराकृतिस्त्वम् ।
त्वया धृताश्चाब्जभवाण्डसङ्घा-
श्चित्रं चरित्रं तव देवि विष्णोः ॥ ६६ ॥

हे मायारूपा आदिशक्ति! तुम ही ब्रह्मा तथा ब्रह्माण्ड समूह की उत्पत्ति का कारण हो और सगुण तथा निर्गुण रूप से साकार एवं निराकार हो। कमलोद्भव ब्रह्मा के उत्पन्न किये हुए ब्रह्माण्ड खण्ड को तुम ही धारण किये हुए हो । भगवान् विष्णु तथा तुम्हारा चरित्र बड़ा ही विचित्र है ॥ ६६ ॥

ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः ।
महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम् ॥ ६७ ॥

हे लक्ष्मी! जब ब्रह्मा, रुद्रादि देवता तथा वेद भी तुम्हारी महिमा का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बखान नहीं कर सके, तो मन्दमति मैं कैसे कर सकता हूँ ॥ ६७ ॥

अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्तासूक्तानि यानि च ।
तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम् ॥ ६८ ॥

हे माता! आप सर्वज्ञ हैं, अतः भले-बुरे ये तुम्हारे इस पुत्र के स्तुति-वचन हैं, उन्हें आप अपनी दयालुतापूर्वक सादर स्वीकार करें ॥ ६८ ॥

भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः ।
इति संचिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं व्रजे ॥ ६९ ॥

हे लक्ष्मी! पहले भी बहुत से भक्त आपकी शरण में आकर कृतार्थ हो गये हों, यह विचार कर मैं आपकी शरण आया हूँ ॥ ६९ ॥

अनन्ता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः ।
इति वेदप्रमाणाद्धि देवि त्वां शरणं व्रजे ॥ ७० ॥

हे देवि! तुम्हारे जो भक्त निष्ठावान् होते हैं, वे अनन्त काल तक सदा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुखी रहते हैं। इस वेदोक्त-प्रमाण से ही मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ ॥ ७० ॥

तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित् ।
इति संचिन्त्य संचिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम् ॥ ७१ ॥

हे देवि! तुम्हारी यह प्रतिज्ञा है कि "मेरा भक्त कभी भी दुःखी नहीं होता" ऐसा विचार करके ही मैं जी रहा हूँ ॥ ७१ ॥

त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते ।
यावत्सम्पूर्णकामः स्यां तावद्देहि दयानिधे ॥ ७२ ॥

हे माता! मैं तो तेरे आधीन हूँ, और मेरे ऊपर तुम्हारी कृपा है। हे दयानिधे! मुझे इतना दें जिससे मेरी सम्पूर्ण कामनायें पूरी हों ॥ ७२ ॥

क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना ।
न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः ॥ ७३ ॥

हे लक्ष्मी! जैसे जल के जीव जल के विना नहीं रह सकते, उसी प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम्हारी कृपा के विना मैं क्षणमात्र भी जीवित नहीं रह सकता ॥ ७३ ॥

यथा हि पुत्रवात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी ।
वत्सं त्वरितमागत्य सम्प्रीणयति वत्सला ॥ ७४ ॥

हे लक्ष्मी! जैसे गाय पुत्रस्नेह के वशीभूत होकर जल्दी घर आकर दूध झरते हुए स्तन पिलाकर बछड़े को तृप्त करती है ॥ ७४ ॥

यदि स्यां तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी ।
दयापयोधरस्तन्य - सुधाभिरभिषिंच माम् ॥ ७५ ॥

जबकि मैं तुम्हारा पुत्र हूँ, और तुम मेरी माता हो, तब क्यों नहीं अपने दया रूपी स्तन से अमृत रूपी दुग्ध पिलाकर मुझे भी तृप्त करो ॥ ७५ ॥

मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे ।
पांसूनां वृष्टिबिन्दूनां दोषाणां च न मे मतिः ॥ ७६ ॥

हे माता! मैं दुर्गुणों की खान हूँ, गुण की दृष्टि से मुझमें किञ्चित मात्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भी गुण नहीं हैं। बालू के कण, वर्षा के बिन्दु के समान मेरे दोषों का भी अन्त नहीं है ॥ ७६ ॥

पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः ।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥ ७७॥

हे माता! जबकि मैं सबसे बड़ा पापी हूँ और तुम सबसे बड़ी दयालु हो, तब तीनों लोकों में मुझसे बढ़कर और कौन आपकी दया का पात्र हो सकता है ॥ ७७ ॥

विधिनाऽहं न सृष्टश्चेन्नस्यात्तव दयालुता ।
आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥ ७८ ॥

हे माता! यदि ब्रह्मा ने मुझे पैदा न किया होता, तो तुम्हारी दया भी न होती, क्योंकि यदि बीमार न हो, तो औषधि का पैदा होना व्यर्थ है ॥ ७८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृपा मदग्रजा किन्ते अहं किं वा तदग्रजः ।
विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे ॥ ७९ ॥

हे दयानिधि देवि! आपकी कृपा पहले अथवा मैं पहले उत्पन्न हुआ हूँ अर्थात् मेरी उत्पत्ति के साथ ही आपकी कृपा भी उत्पन्न हुई है । यह विचार कर मुझको धन-सम्पत्ति दो ॥ ७९ ॥

माता पिता त्वं गुरुः सद्गतिः श्रीः
त्वमेव सञ्जीवनहेतुभूता ।
अन्यन्न मन्ये जगदेकनाथे
त्वमेव सर्वं मम देवि सत्ये ॥ ८० ॥

हे लक्ष्मी! तुम ही माता-पिता एवं श्रेष्ठ आश्रय हो और तुम ही मेरे जीवन का कारण हो, तुम संसार की एकमात्र स्वामिनी हो । मैं तुम्हारे सिवा और किसी को भी शरण देने वाली नहीं मानता, अतः मेरा तो तुम्हीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वस्व हो ॥ ८० ॥

आद्यादि लक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना
विशुद्ध विज्ञानसुखैकदोग्ध्री ।
अज्ञानहन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता
प्रज्ञाननेत्री भव सुप्रसन्ना ॥ ८१ ॥

हे लक्ष्मी! आप आदिशक्ति, विशुद्ध आत्मज्ञान रूपी आनन्द को देने वाली, अज्ञान का नाश करने वाली, सत्व, रज, तम तीनों गुणों से परे, प्रज्ञान स्वरूप हो । आप मुझ पर प्रसन्न होओ ॥ ८१ ॥

अशेषवाग्जाड्यमलापहन्त्री
नवं नवं स्पष्टसुवाक्प्रदायिनी ।
ममेह जिह्वाग्रसुरङ्गनर्तकी
भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः ॥ ८२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरी वाणी की जड़ता (मूर्खता) रूप दोष को दूर करके नई-नई स्पष्ट तथा सुन्दर सूक्तियों का समावेश करने वाली, विद्या रूप से वाणी पर नृत्य करनेवाली देवि! मेरे मुख में प्रसन्न होकर वास करें ॥ ८२ ॥

समस्तसम्पत्सु विराजमाना
समस्ततेजश्च विभासमाना ।
विष्णुप्रिये त्वं भव दीप्यमाना
वाग्देवता मे नयने प्रसन्ना ॥ ८३ ॥

हे विष्णुप्रिये! समस्त सम्पत्ति के रूप में रहने वाली और अपने दिव्य तेज-समूह से देदीप्यमान आप सरस्वती रूप से प्रसन्न होकर मेरे नयनों में वास करो ॥ ८३ ॥

सर्वप्रदर्शे सकलार्थदे त्वं
प्रभासुलावण्यदयाप्रदोग्ध्री ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्रीः
हिरणमयी मे नयने प्रसन्ना ॥ ८४ ॥

हे लक्ष्मी! तुम सबसे श्रेष्ठ दर्शनीय, सम्पूर्ण इच्छित फल को देने वाली अपनी कान्ति में दया रूपी सौन्दर्य का बरसाने वाली तथा सुवर्ण को देने वाली, सौन्दर्यमयी प्रसन्नतायुक्त मेरे सम्मुख होती हुई मेरे नयनों में वास करो ॥ ८४ ॥

सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः
सर्वेश्वरी सर्वभयापहन्त्री ।
गर्वोन्नता वं सुमुखी भव श्रीः
हिरणमयी मे नयने प्रसन्ना ॥ ८५ ॥

हे लक्ष्मी! तुम सब प्रकार से धन देने वाली, जगज्जननी, जगदीश्वरी सम्पूर्ण भय को दूर करने वाली, सबसे श्रेष्ठ हो। अतः प्रसन्न होकर स्वर्ण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रूप से मेरी आँखों के सामने रहो ॥ ८५ ॥

समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी
समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा ।
अनन्तसौभाग्यसुखप्रदायिनी
हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना ॥ ८६ ॥

समस्त विघ्न समूह का नाश करने वाली, भक्तमात्र का उद्धार करने में विचक्षण (चतुर) अनन्त कालस्थायी सौभाग्य सुख देने वाली सौन्दर्यमयी लक्ष्मी! प्रसन्न होकर मेरे नयनों में वास करें ॥ ८६ ॥

देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं
देवाधिनाथभवदेवगणाभिवन्द्ये ।
मातस्तथैव भव संनिहिता दृशोर्मे
पत्यासमं मम मुखे भव सुप्रसन्ना ॥ ८७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे देवि! मुझ दयनीय भक्त पर दया करो । शिव, ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवगणों से आप स्तुत हो, (जैसे आप देवताओं से सन्मुख होती हो) उसी प्रकार प्रीतियुक्त होकर प्रसन्न मन से (सरस्वती रूप से) मेरे मुख में तथा (लक्ष्मी रूप से) आँखों में वास करो ॥ ८७ ॥

मा वत्स भैरभयदानकरोऽर्पितस्ते
मौलो ममेति मयि दीनदयानुकम्पे ।
मातः समर्पय मुदा करुणाकटाक्षं
माङ्गल्यबीजमिह नः सृज जन्म मातः ॥ ८८ ॥

हे दीनों पर दया करने वाली! 'पुत्र मत भय कर' ऐसा कहती हुई आपने अपना अभ्य करने वाला वरद हस्त मेरे शिर पर रख दिया । हे माता! स्नेह तथा दया की दृष्टि से देखो, और मेरे लिए मांगल्य कार्य के बीज को अंकुरित करो ॥ ८८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कटाक्ष इह कामधुक् तव मनस्तु चिन्तामणिः
करः सुरतरुः सदा नवनिधिस्त्वमेवेन्दिरे ।
भवेत्तव दयारसो मम रसायनं चान्वहं
मुखं तव कलानिधिर्विविधवांछितार्थप्रदम् ॥ ८९ ॥

हे इन्दिरे! तुम्हारी दयादृष्टि मेरे लिये कामधेनु है, मन चिन्तामणि और हाथ कल्पवृक्ष तथा नवनिधि सदा आप ही हैं। तुम्हारा दयारूपी रस मेरा रसायन और प्रतिदिन विविध मनोरथ पूर्ण करने वाला तुम्हारा मुख मेरे लिये कलानिधि चन्द्रमा ही है ॥ ८९ ॥

यथा रसस्पर्शनतोऽयसोऽपि
सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते ।
कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाम्
अमङ्गलानामपि मङ्गलत्वम् ॥ ९० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे लक्ष्मी! जैसे पारस मणि के स्पर्श से लोहा भी सुवर्ण हो जाता है, वैसे ही आपकी कृपादृष्टि के स्पर्श से मनुष्यों के अमंगल भी मंगल रूप हो जाते हैं ॥ ९० ॥

देहीती नास्तीति वचः प्रवेशा-
द्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपद्ये ।
अतः सदास्मिन्नभयप्रदा त्वं
सहैव पत्या मयि संनिधेहि ॥ ९१ ॥

हे रमे! मांगने में नकारात्मक उत्तर पाने की आशङ्का से भयभीत होकर मैं आपकी शरण में आया हूँ । इसलिये आप अपने स्वामी नारायण सहित अभयदान करती हुई मेरे घर में वास करें ॥ ९१ ॥

कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या
श्रीस्ते कला मयि रसेन रसायनेन ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आस्तां यतो मम च दृक्शिरपाणिपाद-
स्पृष्टास्सुवर्णवपुषस्स्थिरजङ्गमास्स्युः॥ १२ ॥

हे लक्ष्मी! आपकी कला-कल्पवृक्ष, चिन्तामणि कामधेनु एवं रसायन-कारी पारस सहित मुझमें निवास करे, जिससे कि समस्त चराचर जगत मेरी दृष्टि, शिर, हाथ, पैर के स्पर्श मात्र से स्वर्ण रूप हो जाये (अर्थात् मैं जहाँ जाऊँ, जिसको देखूँ , जिसका स्पर्श करूँ वह मेरे लिये द्रव्यरूप ही हो जावे) ॥ १२ ॥

आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्मपत्नी
त्वमेव पत्या मयि संनिधेहि ।
आद्यादिलक्ष्मी त्वदनुग्रहेण
पदे पदे मे निधिदर्शनं स्यात् ॥ १३ ॥

हे लक्ष्मी! आप आदि कारण ब्रह्मस्वरूप विष्णु की सदा रहने वाली

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्म-पत्नी हो । अतः अपने स्वामी सहित मुझमें वास करो। हे महालक्ष्मी! आपकी कृपा से पद-पद में मुझको निधि की प्राप्ति होवे ॥ १३ ॥

आद्यादिलक्ष्मीहृदयं पठेद्यः
स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति ।
महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यः
तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति ॥ १४ ॥

जो मनुष्य आदिशक्ति महालक्ष्मी के हृदयस्तोत्र का पाठ करता है वह अचल राजलक्ष्मी को प्राप्त करता है। महा दरिद्री भी धनवान् हो जाता है, उसके वंश में लक्ष्मी सदा स्थिर रहती है ॥ १४ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णुवल्लभा ।
तस्याभीष्टं ददत्याशु तं पालयति पुत्रवत् ॥ १५ ॥

इस लक्ष्मीहृदय के स्मरण मात्र से विष्णुप्रिया लक्ष्मी प्रसन्न होकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इच्छित फल देती हुई पुत्रवत् पालन करती है ॥ ९५ ॥

इदं रहस्यं हृदयं सर्वकामफलप्रदम् ।
जपः पंचसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ॥ ९६ ॥

सम्पूर्ण इच्छित फल देने वाला यह गोपनीय हृदयस्तोत्र है, मूलमन्त्र का पाँच हजार जप करना ही इसका पुरश्चरण (अनुष्ठान) है ॥ ९६ ॥

त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम् ॥ ९७ ॥

जो मनुष्य त्रिकाल अथवा एक काल प्रतिदिन पाठ करता है अथवा श्रवण करता है, वह महाधनी होता है ॥ ९७ ॥

महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे ।
इदं श्रीहृदयं जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत् ॥ ९८ ॥

महालक्ष्मी के उद्देश्य से शुक्रवार की रात्रि को इस हृदय का पाँच

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बार पाठ करने से मनुष्य धनवान् होता है ॥ ९८ ॥

अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम् ।
ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम् ॥ ९९ ॥

इस हृदय से अभिमन्त्रित हविष्यान्न गर्भिणी को खिलाने से उसके कुल में स्वयं लक्ष्मीपति नारायण पुत्र रूप में आते हैं ॥ ९९ ॥

नरेण वाथवा नार्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते ।
जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते ॥ १०० ॥

इस लक्ष्मी हृदय से अभिमन्त्रित जल का पान करने वाले स्त्री अथवा पुरुष के कुल में मन्दभागी का जन्म नहीं होता है ॥ १०० ॥

य आश्विने मासि च शुक्लपक्षे
रमोत्सवे सन्निहितैक भक्त्या ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पठेत्तथैकोत्तरवारवृध्या
लभेत्स सौवर्णमयीं सुवृष्टिम् ॥ १०१ ॥

जो मनुष्य आश्विन शुक्ल पक्ष के दुर्गोत्सव में एक बार भोजन करके प्रतिदिन एकैक वृद्धि क्रम से इसका पाठ करता है, उसको सुवर्णरूप बहुत धन की प्राप्ति होती है ॥ १०१ ॥

य एकभक्तोऽन्वहमेकवर्षं
विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी ।
स मन्दभाग्योऽपि रमाकटाक्षा-
द्भवेत्सहस्राक्षशताधिक श्रीः ॥ १०२ ॥

जो मनुष्य एक बार भोजन करता हुआ ब्रह्मचर्य से रहकर एक वर्ष पर्यन्त प्रतिदिन मूलमन्त्र का केवल ७० बार (नारायण मन्त्र सम्पुटित) जप करता है, वह मन्दभागी होने पर भी लक्ष्मी की कृपा से बहुत अधिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐश्वर्यवान होता है ॥ १०२ ॥

श्रीशांघ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं
प्रपन्नमन्त्रार्थदृढैकनिष्ठाम् ।
गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं
प्रदेहि मातः परमं पदं श्रीः ॥ १०३ ॥

हे मातः! मुझको नारायण के चरणों में भक्ति, भगवान् के भक्तों की सेवा से प्राप्त मन्त्र तथा उसके अर्थ में मात्र दृढ निष्ठा गुरु का स्मरण, निर्मल बोध बुद्धि तथा परम पद (मोक्ष) प्रदान करो ॥ १०३ ॥

पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं
विभूतिवासं विविधार्थसिद्धिम् ।
सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं
प्रदेहि मे देवि पुनः पुनस्त्वम् ॥ १०४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे श्री देवि! आप मुझे बारम्बार पृथ्वीपतित्व, पुरुषों में श्रेष्ठत्व, विभूति शालित्व के साथ मनोरथों की सिद्धि, शुभकीर्ति तथा बहुत काल पर्यन्त सुख भोग प्रदान करो ॥ १०४ ॥

वेदार्थसिद्धिं बहुलोकवश्यं
वयः स्थिरत्वं ललनासु भोगम् ।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं
प्रदेहि मे भार्गवि जन्मजन्मनि ॥ १०५ ॥

हे भार्गवि! मुझको जन्म-जन्मान्तर में वेदार्थ की सिद्धि, लोकवश्यता, चिरायुष्य, भार्या का सुख पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति तथा सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धि प्रदान करो ॥ १०५ ॥

सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्री-
र्विभूतिवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विज्ञानवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः
सौभाग्यवृद्धिंकुरु मे गृहे श्रीः ॥ १०६ ॥

हे श्री लक्ष्मी ! मेरे घर में सुवर्ण विभूति, विज्ञान तथा सौभाग्य की वृद्धि करो ॥ १०६ ॥

अथ शिरोबीजम् ॥ ॐ यं हं कं लं पं श्रीं ॥

ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासां
विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम् ।
बीजापूरं सरसिजयुगं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रं
भर्त्रा युक्तां मुहुरभयदां मह्यमप्यच्युतश्रीः ॥ १०७ ॥

उदीयमान कोटि सूर्यकान्ति के समान कान्तिवाली, बिजली की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चमक के समान सुन्दर वस्त्र धारण करने वाली, आभूषणों से युक्त सुन्दर शोभावाली, बिजोरा नीबू, युग्म कमल तथा सुवर्ण कलश धारण करने वाली, अपने स्वामी विष्णु से संयुक्त, अभय देनेवाली, प्रसन्नमुख लक्ष्मी का ध्यान करें ॥ १०७ ॥

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिता ॥ १०८ ॥

हे महादेवि लक्ष्मी! तुम गोपनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो । मेरे निवेदन किये हुए इस जप का ग्रहण करो । तुम्हारे अनुग्रह से मुझे स्थिर सिद्धि (लक्ष्मी) प्राप्त हो ॥ १०८ ॥

॥ श्री अथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ नारायणहृदयस्तोत्रम्

आचमन प्राणायाम आदि पूर्ववत् क्रिया सम्पन्न करके संकल्प करें ।

देशकालौ निर्दिश्य ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं सङ्कलीकरणरीत्या सम्पुटीकरणरीत्या वा नारायणहृदयस्य सकृदावर्तनं करिष्ये ॥

विनियोगः अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गवऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता । ॐ बीजम् । नमः शक्तिः । नारायणायेति कीलकम् । श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

करन्यासः ॐ नारायणः परं ज्योतिरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ नारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ नारायणः परो देव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ नारायणः परो ध्यातेति अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ नारायणः परं धामेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ नारायणः परो धर्म इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इस प्रकार हृदयादि न्यास कर दिग्बन्ध करें ।

ॐ ऐन्द्र्यादिदशदिशं ॐ नमः सुदर्शनाय सहस्राराय हुं फट् ॥ बध्नामि नमः चक्राय स्वाहा ॥ इससे प्रतिदिशा को जोड़ें ।

ध्यानम् उद्यदादित्यसङ्काशं पीतवाससमच्युतम् ॥
शंखचक्रगदापाणिं ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं हरिम् ॥
"ॐ नमो नारायणाय" इस मन्त्र का जप करें ।

मूलाष्टकम्

ॐ नारायणः परं ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायण परं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारायण ही परम ज्योति है। नारायण ही परम आत्मा है, नारायण ही परम ब्रह्म है। अतः हे नारायण! आपको नमस्कार है ॥ १ ॥

नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः ।
नारायणः परो ध्याता नारायण नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

नारायण ही परम देव है । नारायण ही परम दाता (दानी) है। नारायण ही सर्वोत्तम ध्याता है। अतः हे नारायण आपको नमस्कार है ॥ २ ॥

नारायणः परं धाम ध्यानं नारायणः पर ।
नारायणः परो धर्मो नारायण नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

नारायण ही परं धाम है, नारायण ही ध्यानस्वरूप है। नारायण ही श्रेष्ठ धर्म है। (ऐसे) हे नारायण आपको नमस्कार है ॥ ३ ॥

नारायण परो वैद्यो विद्या नारायणः परः ।
विश्वं नारायणः साक्षान्नारायण नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारायण ही श्रेष्ठ वैद्य है। नारायण ही परा विद्या (जिससे आत्मज्ञान प्राप्त हो) है। नारायण ही साक्षात् विश्व रूप है। (ऐसे) हे नारायण! आपको नमस्कार है ॥ ४ ॥

नारायणाद्विधिर्जातो जातो नारायाणाच्छिवः ।
जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

नारायण से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई है। नारायण से ही शिव की उत्पत्ति हुई है। नारायण से ही इन्द्र की उत्पत्ति हुई है। (ऐसे) हे नारायण! आपको नमस्कार है ॥ ५ ॥

रर्विनारायणं तेजश्चान्द्रं नारायणं महः ।
वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायणः नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

नारायण का ही तेजःस्वरूप सूर्य है। नारायण का ही तेज चन्द्रमा है। नारायण का ही साक्षात् रूप अग्निदेव हैं। (ऐसे) हे नारायण! आपको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्कार है ॥ ६ ॥

नारायण उपास्यः स्याद्गुरुर्नारायणः परः ।
नारायणःपरो बोधो नारायण नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

नारायण ही उपासना करने योग्य हैं। नारायण ही श्रेष्ठ गुरु हैं। नारायण ही ज्ञान स्वरूप हैं। (ऐसे) हे नारायण! आपको नमस्कार है ॥७॥

नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणस्सुखम् ।
सेव्यो नारायणः शुद्धो नारायण नमोस्तु ते ॥ ८ ॥

नारायण ही मुख्य फल (मुक्ति) हैं। नारायण ही अणिमा आदि सिद्धि हैं। अवच्छिन्न सुख भी नारायण ही हैं। गुणातीत नारायण ही परम सेव्य हैं। (ऐसे) हे नारायण! आपको नमस्कार है ॥ ८ ॥

॥ मूलाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थनादशकम्

नारायणस्त्वमेवासि दहराख्ये हृदि स्थितः ।
प्रेरकः प्रेर्यमाणानां त्वया प्रेरितमानसः ॥ १ ॥

भक्तों के हृदय में स्थित होकर उनकी बुद्धि को धर्मादि शुभ कर्मों में लगाने वाले मुख्य प्रेरक आप ही हैं । आपकी प्रेरणा से ही ॥ १ ॥

त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम् ।
नानोपासनमार्गाणां भावहृद्भावबोधकः ॥ २ ॥

आपकी आज्ञा शिरोधार्य करके आपके पावन मन्त्र का जप करता हूँ । भवसागर से पार करने वाली अनेक प्रकार की उपासनाओं के गूढभावों को मनुष्यों के हृदय में लाने वाले आप ही हैं ॥ २ ॥

भावार्थकृद्भावभूतो भाव सौख्यप्रदो भव ।
त्वन्मायामोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम् ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्तों के हृदय में तत्त्वज्ञान का प्रकाश करने वाले सत्स्वरूप आप ही सांसारिक सुख को देने वाले हो । और आपकी माया से मोहित यह संसार भी आपने ही उत्पन्न किया है ॥ ३ ॥

त्वदधिष्ठानमात्रेण सैव सर्वार्थकारिणी ।
त्वमेव तां पुरस्कृत्य मम कामान्समर्धय ॥ ४ ॥

आप के अधिष्ठान मात्र से ही आद्या शक्ति महालक्ष्मी सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली हैं, अतः आप ही महालक्ष्मी द्वारा मेरे मनोरथों को पूर्ण करें ॥ ४ ॥

न मे त्वदन्यस्त्रातास्ति त्वदन्यन्नहि दैवतम् ।
त्वदन्यं नहि जानामि पालकं पुण्यरूपकम् ॥ ५ ॥

तुम्हारे सिवा मेरा कोई रक्षक नहीं, न कोई देवता है। मैं आपके सिवा और किसी को भी नहीं जानता, आप ही मेरा सर्वश्रेष्ठ पालन करने वाले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हो ॥ ५ ॥

यावत्सांसारिको भावो मनःस्थो भावनात्मकः ।
तावत्सिद्धिर्भवेत्साध्या सर्वथा सर्वदा विभो ॥ ६ ॥

हे विभो! यह निश्चय है कि जब तक ये सांसारिक भावनायें मन में स्थित हैं, तब तक सिद्धि सदा साध्य (दूर) ही रहती है ॥ ६ ॥

पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः ।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥ ७ ॥

हे नारायण! पापियों का अग्रणी मैं ही हूँ। और दयालुओं में अग्रणी तुम हो। अतः इस त्रिलोकी में मुझसे अधिक तुम्हारे लिए और दूसरा कौन दयनीय होगा ॥ ७ ॥

त्वयाप्यहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ।
आमयो नैव सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे नारायण! यदि आपने मुझको उत्पन्न न किया होता, तो आप में दयालुता भी न हुई होती, क्योंकि यदि रोग ही पैदा न हो तो औषधि का उत्पन्न होना व्यर्थ है ॥ ८ ॥

पापसङ्घपरिक्रान्तः पापात्मा पापरूपधृक् ।
त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्यस्त्राता मे जगती तले ॥ ९ ॥

हे नारायण! मैं स्वयं पापस्वरूप, पापात्मा और पापसमूह से युक्त हूँ, आपके सिवा इस संसार में पापों से रक्षा करने वाला मेरा और कौन है ॥ ९ ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च गुरुस्त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ १० ॥

हे नारायण! आप ही मेरे माता और पिता हैं, आप ही बन्धु, मित्र,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्या तथा गुरु हैं । हे देवाधिदेव! आप ही मेरे सर्वस्व हैं ॥ १० ॥

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमुदाहृतम् ।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ॥ ११ ॥

ये 'मूलाष्टक' और 'प्रार्थनादशक' कहे गये हैं। जो इनका नित्य पाठ या श्रवण करता है, उसके घर में लक्ष्मी सदा स्थिर होकर रहती है ॥ ११ ॥

नारायणस्य हृदयं सर्वाभीष्टफलप्रदं ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं यदि चेत्तद्विनाकृतम् ॥ १२ ॥

यदि सम्पूर्ण इच्छित फल देने वाले 'लक्ष्मी हृदय' स्तोत्र का पाठ 'नारायण हृदय' स्तोत्र के बिना किया जाये तो ॥ १२ ॥

तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुद्ध्यति सर्वदा ।
एतत्सङ्कलितं स्तोत्रं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥ १३ ॥

किया हुआ पाठ निष्फल हो जाता है। और लक्ष्मी सदा क्रुद्ध हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाती है। इसलिए 'नारायण हृदय' से संयुक्त ही 'लक्ष्मी हृदय' स्तोत्र सम्पूर्ण फल को देने वाला है ॥ १३ ॥

लक्ष्मीहृदयकं चैव तथा नारायणात्मकम् ।
जपेद्यः सङ्कलीकृत्य सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ॥ १४ ॥

जो मनुष्य 'लक्ष्मी हृदय' तथा 'नारायण हृदय' को एक साथ मिलाकर पाठ करता है, वह सम्पूर्ण इच्छित फल को प्राप्त करता है ॥ १४ ॥

नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं जपेन्नारायणं पुनः ॥ १५ ॥

पहले 'नारायण हृदय' का पाठ करके 'लक्ष्मी हृदय' का पाठ करें। तत्पश्चात् पुनः 'नारायण हृदय' का पाठ करें ॥ १५ ॥

पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीकृतं जपेत् ।
पुनर्नारायणं जाप्यं सङ्कलीकरणं भवेत् ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यदि एक से अधिक पाठ करने हों, तो भी 'नारायण हृदय' का पाठ करके, तत्पश्चात् 'लक्ष्मी हृदय' का पाठ करें, तत्पश्चात् पुनः 'नारायण हृदय' का पाठ करने से सङ्कलीकरण होता है ॥ १६ ॥

एवं मध्ये द्विवारेण जपेत्सङ्कलितं तु तत् ।
लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं सर्वकामप्रकाशितम् ॥ १७ ॥

इस प्रकार 'लक्ष्मी हृदय' के जितने पाठ करें, उनके मध्य में दो-दो वार 'नारायण हृदय' का पाठ करने से 'सङ्कलित' पाठ होता है। यह 'लक्ष्मी हृदय' स्तोत्र सम्पूर्ण इच्छित फल को देने वाला है ॥ १७ ॥

तद्वज्जपादिकं कुर्यादेतत्सङ्कलितं शुभम् ।
सर्वान्कामानवाप्नोति आधिव्याधिभयं हरेत् ॥ १८ ॥

इसी प्रकार जप भी करना चाहिए । इस प्रकार जप तथा 'संकलित' पाठ करने से सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि होती है और चिन्ता, शोक, रोग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदि सम्पूर्ण भय-बाधायें नष्ट होती हैं ॥ १८ ॥

गोप्यमेतत्सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत् ।
इति गुह्यतमं शास्त्रं प्राप्तं ब्रह्मादिकैः पुरा ॥ १९ ॥

इस उपासना को सदा गुप्त रखना चाहिये, सबके सामने प्रकाश नहीं करना चाहिए । इस गुप्त विद्या को प्रथम ब्रह्मा आदि देवताओं ने प्राप्त किया था ॥ १९ ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपयेत्साधयेत्सुधीः ।
यत्रैतत्पुस्तकं तिष्ठेल्लक्ष्मीनारायणात्मकम् ॥ २० ॥

इसलिए इस उपासना को गुप्त रखता हुआ साधना करे । जिस घर में ये दोनों स्तोत्र की पुस्तकें रहती हैं ॥ २० ॥

भूतपैशाचवेताला न स्थिरास्तत्र सर्वदा ।
लक्ष्मीहृदयकं प्रोक्तं विधिना साधयेत्सुधीः ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वहाँ भूत, पिशाच तथा बेताल आदि कभी नहीं रह सकते । अतः विद्वान् पुरुष को उक्त 'लक्ष्मी हृदय' की विधिपूर्वक ही साधना करनी चाहिये ॥ २१ ॥

भृगुवारे च रात्रौ च पूजयेत्पुस्तकद्वयम् ।
सर्वथा सर्वदा सत्यं गोपयेत्साधयेत्सुधीः ।
गोपनात्साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः ॥ २२ ॥

और शुक्रवार की रात्रि को इन दोनों पुस्तकों की पूजा करे। सर्वदा सर्व प्रकार से गुप्त रखता हुआ उपासना करे। ऐसा करने से संसार में श्रेष्ठ सम्पन्न और माननीय होता है ॥ २२ ॥

॥ इत्यथर्वणरहस्ये उत्तरभागे नारायणहृदयं सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ लक्ष्मीमन्त्रानुष्ठानविधानम्

अब श्री, सौभाग्य, सुख और सम्पत्ति प्रदान करने वाले लक्ष्मी एवं नारायण के एकाक्षरादि अनेकविध मन्त्रों के अनुष्ठान की कुछ विधियाँ शारदातिलकादि तन्त्रग्रन्थों से लेकर सर्वजनहितार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं ।

॥ एकाक्षरं चतुरक्षरं वा मन्त्रपुरश्चरणप्रयोगः ॥

विनियोगः अस्य लक्ष्मीबीजमन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः निचृच्छन्दः श्रीलक्ष्मीः देवता शं बीजम् । ईं शक्तिः ॥ रं कीलकम् ॥ सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ऋष्यादिन्यासः ॐ भृगुर्ऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ निचृच्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ श्रीदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ शं बीजाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ईं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ रं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥

करन्यासः ॐ श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥

हृदयन्यासः ॐ श्रां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ श्रूँ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ श्रैं कवचाय हुँ नमः ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ श्रः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

मन्त्रः ॥ ॐ श्रीं ॥ यह एकाक्षरी बीजमन्त्र है ।

ध्यानम् कान्त्या काञ्चनसन्निभांहिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः
हस्तोत्क्षिप्तहिरणमयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बलसितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥ १ ॥

मन्त्रः ॥ ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ॥ यह चतुरक्षर बीजमन्त्र है ।

ध्यानम् **माणिक्यप्रतिमप्रभाहिमनिभैस्तुंगैश्चतुर्भिर्गजैः**
हस्ताग्राहितरत्नकुम्भसलिलैरासिच्यमानां मुदा ।
हस्ताब्जैर्वरदानमम्बुजयुगाभीतीर्दधानां हरेः
कान्ताङ्काङ्क्षितपारिजातलतिकां वन्दे सरोजासनाम् ॥ २ ॥

इस प्रकार एकाक्षर या चतुरक्षर मन्त्र का ध्यान कर पूर्वोक्त प्रकार से यथाविधि षोडशोपचार या मानसोपचार पूजा कर अपने शरीर में मण्डूकादि परतत्त्वान्तपीठ देवताओं का न्यास कर पीठ देवताओं की पूजा करें ।

(पुष्प व अक्षत लेकर स्ववाम भाग में) **श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गं गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ पीठमध्ये ॐ**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मं मण्डूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ आधारशक्त्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐक्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ इति संपूज्य ॥

(अग्निकोण में) ॐ धं धर्माय नमः ॥ १३ ॥ (निर्ऋति में) ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ (वायव्य में) ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ (ईशान में) ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ (पूर्व में) ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ (दक्षिण में) ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ (पश्चिम में) ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ (उत्तर में) ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ इति पूजा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(मध्य में) ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारामय-केसरेभ्योनमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ॥ २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ अं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३६ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ३९ ॥ इति पीठदेवता पूजा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुरक्षरलक्ष्मीयन्त्रम्

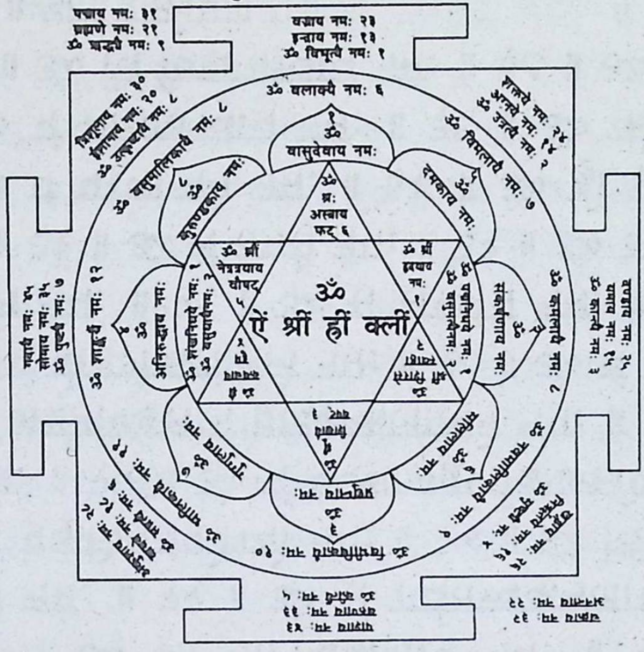

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार पीठदेवता की पूजा कर पूर्वादि दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों से पीठशक्तियों की पूजा करें ।

ॐ विभूत्यै नमः ॥ १ ॥ **ॐ उन्नत्यै नमः** ॥ २ ॥ **ॐ कान्त्यै नमः** ॥ ३ ॥ **ॐ सृष्ट्यै नमः** ॥ ४ ॥ **ॐ कीर्त्यै नमः** ॥ ५ ॥ **ॐ सन्नत्यै नमः** ॥ ६ ॥ **ॐ पुष्ट्यै नमः** ॥ ७ ॥ **ॐ उत्कृष्टायै नमः** ॥ ८ ॥ (मध्ये) **ॐ ऋद्ध्यै नमः** ॥ ९ ॥ इति पीठशक्तिपूजा ॥

(तदुपरि) श्री कमलासनाय नमः इस मन्त्र से आसन देकर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर पाद्यार्घ्यादि से पुष्पार्पण तक पूजा कर आवरण पूजा करें ।

आग्नेयादिषट्कोणकेसरेषु मध्ये दिक्षु च ॥ **ॐ श्रीं हृदयाय नमः** ॥ १ ॥ **ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा** ॥ २ ॥ **ॐ श्रूं शिखायै वषट्** ॥ ३ ॥ **ॐ श्रैं कवचाय हुँ** ॥ ४ ॥ **ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्** ॥ ५ ॥ **ॐ श्रः**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडङ्गपूजा ॥

तद्बहिरष्टदले पूर्वादिचतुर्दिक्षु क्रमेण ॐ वासुदेवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सङ्कर्षणाय नमः ॥ २ ॥ ॐ प्रद्युम्नाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अनिरुद्धाय नमः ॥ ४ ॥ (कोणदलेषु) ॐ दमकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ सलिलाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गुग्गुलाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ कुरुण्डकाय नमः ॥ ८ ॥ इति पूजयेत् ॥

(देवीदक्षिणभागे) ॐ शङ्खनिधये नमः ॥ १ ॥ ॐ वसुधायै नमः ॥ २ ॥ (देवीवामे) ॐ पद्मनिधये नमः ॥ १ ॥ ॐ वसुमत्यै नमः ॥ २ ॥ इति पूजयेत् ॥

(अष्टदलाग्रेषु पूर्वादिक्रमेण)। ॐ बलाक्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलायै नमः ॥ २ ॥ ॐ कमलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ नवमालिकायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ विभीषिकायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ भालिकायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ६ ॥ ॐ शाङ्गर्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ वसुमालिकायै नमः ॥ ८ ॥ इति पूजयेत् ॥

(तद्बहिः) भूपुरे पूर्वादिदिक्षु । ॐ इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ अग्नये नमः ॥ २ ॥ ॐ यमाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ निर्ऋतये नमः ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वायवे नमः ॥ ६ ॥ ॐ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ (ऊर्ध्व) ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ९ ॥ (अधः) ॐ अनन्ताय नमः ॥ १० ॥ इति दशदिक्पालपूजा॥

(तद्बाह्ये) ॐ वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दण्डाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अङ्कुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चक्राय नमः ॥ १० ॥ इत्यायुधपूजा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार आवरणपूजा करके धूप दीपादि नमस्कारांत पूजा स्तुति कर जप करें। इस मन्त्र का पुरश्चरण द्वादशलक्षजप का है। जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा तद्दशांश ब्राह्मणभोजन अवश्य करें। इस प्रकार पूर्ण फल प्राप्त होता है अन्यथा नहीं। इस प्रकार संयम, नियम तथा ब्रह्मचर्य पूर्वक श्रीमन्त्र दीक्षित व्यक्ति बारह लाख जप करने पर सिद्धि प्राप्त करता है। तत्पश्चात् नित्य सुगन्धित पद्मपुष्पों से श्री अर्चना करे तथा-तिल-घृत शर्करा और बिल्वफलों से होम करे । इससे सर्वदा श्रीकृपा बनी रहेगी ।

॥ एकाक्षरचतुरक्षरलक्ष्मीमन्त्रपुरश्चरणप्रयोगः सम्पूर्णः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

मन्त्रः ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा ॥ यह दशाक्षरी बीजमन्त्र है। विनियोगः अस्य मन्त्रस्य दक्षऋषिः । विराट् छन्दः । लक्ष्मीर्देवता अभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ऋष्यादिन्यासः ॐ दक्षऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ विराट्छन्दसे नमो मुखे ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मीदेवतायै नमो हृदि ॥ ३ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥

करन्यासः ॐ देव्यै नमः इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ पद्मिन्यै नमः इति तर्जनीभ्यां० ॥ २ ॥ ॐ विष्णुपत्न्यै नमः इति मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ वरदायै नमः इत्यनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ कमलरूपायै नमः इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ इति करन्यासः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशाक्षरलक्ष्मीयन्त्रम्

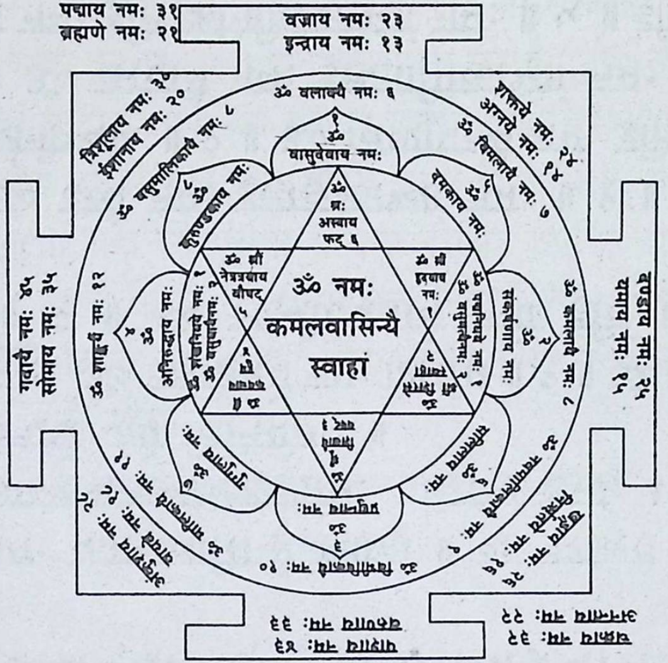

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार नेत्रहीनं हृदयादि पञ्चाङ्गन्यास करके ध्यान करें ।

ध्यानम् आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती
दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनीसन्निभा ।
मुक्तादामविराजमानपृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासनी
पायान्नः कमला कटाक्षविभवैरानन्दयन्ती हरिम् ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान कर पूर्वोक्त विधि से आवरण सहित विधिवत् पूजा कर जप करें । इसका पुरश्चरण दशलक्षजप का है।

॥ इति दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ द्वादशाक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

मन्त्रः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः ॥ द्वादशाक्षर मन्त्र।

विनियोगः अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। महालक्ष्मीर्देवता। सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ महालक्ष्मीदेवतायै० हृदि ॥ ३ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥

इसके बाद मूलमन्त्र से हाथ धोकर करन्यास करें ।

करन्यासः ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रीं मध्यामाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः मूर्द्धादिचरणांतं व्यापकं कुर्यात् ॥ ७ ॥ इति करन्यासः ॥

पञ्चबीजन्यासः ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ श्रीं नमः वक्षसि ॥ ३ ॥ ॐ क्लीं नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ सौं नमः पादयोः ॥ ५ ॥ इति पञ्चबीजन्यासः।

सप्तवर्णसप्तधातुन्यासः ॐ जं नमः त्वचि ॥ १ ॥ ॐ गं नमः रक्ते ॥ २ ॥ ॐ त्प्रं नमः मांसे ॥ ३ ॥ ॐ सूं नमः मेदसि ॥ ४ ॥ ॐ त्यैं नमः अस्थ्नि ॥ ५ ॥ ॐ नं नमः मज्जायाम् ॥ ६ ॥ ॐ मं नमः शुक्रे ॥७॥ इति सप्तवर्ण सप्तधातु न्यासः हृदय में करें ।

करन्यासः ॐ ऐं ज्ञानाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥३॥ ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ सौं वीर्याय कनष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ जगत्प्रसूत्यै तेजसे नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॥

इसी प्रकार हृदयादिन्यास करके ध्यान करें ।

ध्यानम्

बालार्कद्युतिमिन्दुखण्डविलसत्कोटीरहारोज्ज्वलां
रत्नाकल्पविभूषितां कुचनतां शालैः करैर्मञ्जरीम् ।
पद्मं कौस्तुभरत्नमप्यविरतं संबिभ्रतीं सस्मितां
फुल्लाम्भोजविलोचनत्रययुतां ध्यायेत्परां देवताम् ॥ १ ॥
सिञ्जन्मञ्जीरसंशोभिपदाम्भोजविराजिताम् ।
नवरत्नगणाकीर्णां काञ्चीदामविभूषिताम् ॥ २ ॥
मुक्तामाणिक्यवैदूर्य-सम्बद्धोदरबन्धनाम् ।
विभ्राजमानां मध्येन वलित्रितयशोभिताम् ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाह्नवीसरिदावर्तशोभिनाभिविभूषिताम् ।
पाटीर-पङ्क-कर्पूर-कुङ्कुमालंकृतस्तनीम् ॥ ४ ॥
वारिवाह-विनिर्मुक्त-मुक्तादामगरीयसीम् ।
वहन्तीमुत्तरासङ्गं दुकूलपरिकल्पिताम् ॥ ५ ॥
तप्तकाञ्चनसन्नद्ध - वैदूर्याङ्गदभूषणाम् ।
पद्मरागस्फुरद्वर्णकङ्कणाढ्यकराम्बुजाम् ॥ ६ ॥
माणिक्यशकलाबद्धमुद्रिकाभिरलंकृताम् ।
तप्तहाटकसंक्लप्त-मालग्रैवेयशोभिताम् ॥ ७ ॥
विचित्रविविधाकल्पकम्बुसङ्काशकन्धराम् ।
उद्यद्दिनकराकार-मणिताटङ्क-मण्डिताम् ॥ ८ ॥
रत्नाङ्कितलसत्स्वर्णकर्णपूरोपशोभिताम् ।
जपाविद्रुमलावण्य-ललिताधरपल्लवाम् ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दाडिमीफलबीजाभदन्तपंक्तिविभूषिताम् ।
कलङ्ककार्श्यनिर्मुक्तशरच्चन्द्रनिभाननाम् ॥ १० ॥
पुण्डरीक-दलाकार-नयनत्रय-सुन्दरीम् ।
भ्रूलताजितकन्दर्प-करकार्मुकविभ्रमाम् ॥ ११ ॥
विलसत्तिलपुष्पश्रीविजयोद्यतनासिकाम् ।
ललाटकान्तिविभवविजितार्द्धसुधाकराम् ॥ १२ ॥
सान्द्रसौरभसम्पन्नकस्तूरीतिलकाङ्किताम् ।
मत्तालिमालाविलसदलकाढ्यमुखाम्बुजाम् ॥ १३ ॥
पारिजातप्रसूनश्रीवाहिधम्मिल्लबन्धनाम् ।
अनर्घ्यरत्नघटित-मुकुटाङ्कित-मस्तकाम् ॥ १४ ॥
सर्वलावण्यवसतिं भवनं विभ्रमश्रियः ।
तेजसां जन्मभूमिं तां महालक्ष्मीं मनोहराम् ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार ध्यान कर मानसोपचार से पूजा करके पूर्वोक्त श्रीबीजोदित पीठ या यन्त्र में मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर पाद्यादि पुष्पान्त उपचार से पूजा करके निम्नविधि से आवरण पूजा करें ।

(लक्ष्मी के दक्षिण भाग में) **ॐ शङ्करनन्दनाय नमः ॥ १ ॥** (वामभागे) **ॐ पुष्पधन्वने नमः ॥ २ ॥** षड्दल, आग्नेयादिकोणकेसर, मध्य और दिशाओं में । **ॐ ऐं ज्ञानाय नमः हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ श्रीं शक्त्यै नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ क्लीं बलाय नमः कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ सौं वीर्याय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ जगत्प्रसूत्यै नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥** इति षडङ्ग पूजा ॥

(अष्टदलों में पूर्वादि क्रम से) **ॐ उमायै नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रियै नमः ॥ २ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ दुर्गायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ गायत्र्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ देव्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ उषायै नमः ॥ ८ ॥ इति पूजयेत् ।

(दक्षिणे) ॐ जाह्नव्यै नमः ॥ १ ॥ (वामे) ॐ यमुनायै नमः ॥ २ ॥

(पुनर्दक्षिणपार्श्वे) ॐ शङ्खनिधये नमः ॥ १ ॥ (वामपार्श्वे) ॐ पद्मनिधये नमः ॥ २ ॥ (पश्चिमे) ॐ वरुणाय नमः ॥ ३ ॥ इति पूजा ॥

(बाहर वाले द्वादशदलों में पूर्वादिक्रम से) ॐ मेषाय नमः ॥ १ ॥ ॐ वृषाय नमः ॥ २ ॥ ॐ मिथुनाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ कर्काय नमः ॥ ४ ॥ ॐ सिंहाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कन्यायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ तुलायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ वृश्चिकाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ धनुषे नमः ॥ ९ ॥ ॐ मकराय नमः ॥ १० ॥ ॐ कुम्भाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ मीनाय नमः ॥ १२ ॥ इति राशीपूजा।

(तद्बहिः) ॐ सूर्याय नमः ॥ १ ॥ ॐ चन्द्रमसे नमः ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वादशाक्षरलक्ष्मीयन्त्रम्

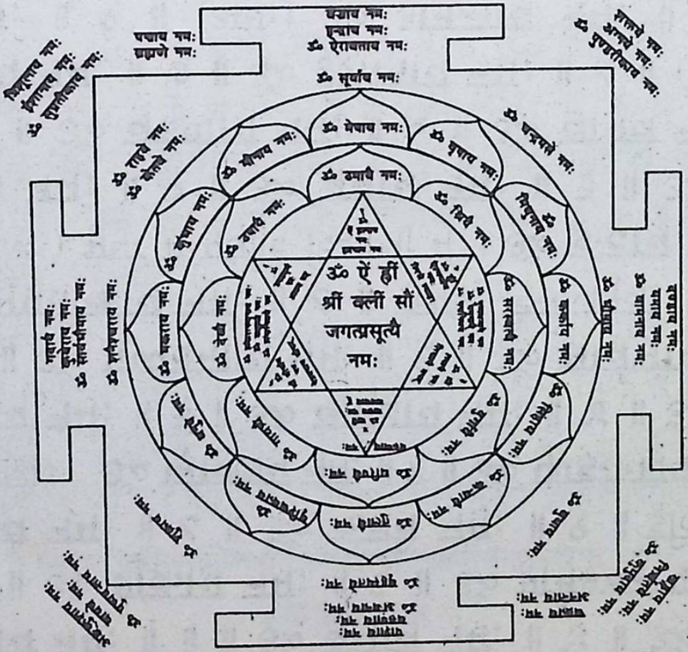

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ मङ्गलाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ बुधाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ बृहस्पतये नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्चराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ राहवे नमः ॥ ८ ॥ ॐ केतवे नमः ॥ ९ ॥ इति ग्रहपूजा ।

(तद्बाह्ये) ॐ ऐरावताय नमः ॥ १ ॥ ॐ पुण्डरीकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ वामनाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ कुमुदाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अञ्जनाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥ ६ ॥ ॐ सार्वभौमाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ सुप्रतीकाय नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्ट दिग्गजपूजा ॥

(तद्बहिः) भूपुर में पूर्वादि दिशाओं में । ॐ इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ अग्नये नमः ॥ २ ॥ ॐ यमाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ निर्ऋतये नमः ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वायवे नमः ॥ ६ ॥ ॐ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ (ऊर्ध्वम्) ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ९ ॥ (अधः) ॐ अनन्ताय नमः ॥ १० ॥ इति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशदिक्पालपूजा ॥

(तद्बाह्ये) **ॐ वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दण्डाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अङ्कुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चक्राय नमः ॥ १० ॥** इत्यायुधपूजा ॥

इस प्रकार सप्तावरणपूजा करके धूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणादि से भगवती की विधिवत् पूजा व नीराजन करके साष्टाङ्ग प्रणाम तथा स्तुति करके जप करें । इसका पुरश्चरण बारह लाख जप का है । जप के अन्त में घृतपद्मबिल्वफलों से दशांश होम, तर्पण, मार्जन व ब्राह्मणभोजन करें ॥

॥ श्रीशारदातिलकोक्तद्वादशक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः पूर्णः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सप्तविंशतिवर्णात्मकमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

मन्त्रः ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" यह सत्ताईस अक्षरों का मन्त्रः है ॥

विनियोगः अस्य सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रस्य दक्षऋषिः। विराट् छन्दः । महालक्ष्मीर्देवता । सकलकामनासिद्धये विनियोगः ॥

ऋष्यादिन्यासः ॐ दक्षऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ विराट्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥

करन्यासः श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्री अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ श्रीं ह्रीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीकनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ इति करन्यासः ।

इस प्रकार नेत्रहीन पञ्चाङ्ग हृदयादिन्यास करें ।

ध्यानम्

सिन्दूरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौदर्यवारां निधिं
कोटीराङ्गदहारकुण्डलकटीसूत्रादिभिर्भूषिताम् ।
हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं पराम्
आवीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार से पूजा कर पूर्वोक्त श्रीबीजोदित पीठ या यन्त्र में पुष्पोपचार तक महालक्ष्मी की पूजा करके इस प्रकार आवरणपूजा करें ।

(षट्कोण और दिशाओं में) **श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ २ ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति पञ्चाङ्गपूजा ।

(उसके बाहर अष्टदल के मूल में पूर्वादिक्रम से) ॐ श्रीधराय नमः ॥ १ ॥ ॐ हृषीकेशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ वैकुण्ठाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ विश्वरूपाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ वासुदेवाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ सङ्कर्षणाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ प्रद्युम्नाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ अनिरुद्धाय नमः ॥ ८ ॥ इति पूजा ।

(उसके पश्चात् पूर्वादि दिशाओं और उनके मध्य में) ॐ भारत्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ चान्द्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ शच्यै नमः ॥ ४ ॥ (विदिशा दलों के मध्य में) ॐ दमकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ सलिलाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गुग्गुलवे नमः ॥ ७ ॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्तविंशत्यक्षरलक्ष्मीयन्त्रम्

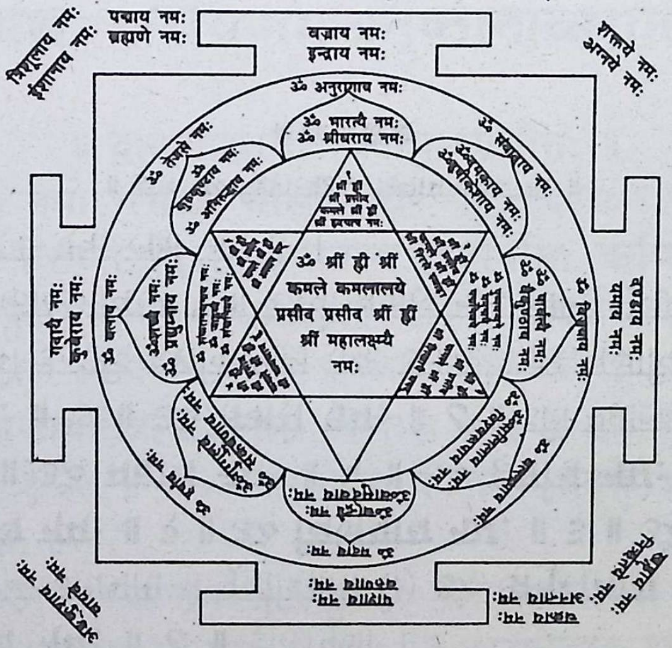

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुरुण्टकाय नमः ॥ ८ ॥ इति पूजा ।

(दलों के अग्रभाग में पूर्वादिक्रम से) **ॐ अनुरागाय नमः ॥ १ ॥ ॐ संवादाय नमः ॥ २ ॥ ॐ विजयाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ वल्लभाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ मदाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ हर्षाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ तेजसे नमः ॥ ८ ॥** इति महालक्ष्मीबाणपूजा ।

भूपुर में इन्द्रादि दशदिक्पाल तथा उनके बाहर वज्रादि आयुध पूजा करें । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नीराजनान्त पूजाकर जप करें। इसका पुरश्चरण एक लक्ष जप है ।

॥ इति सप्तविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ नारायणमन्त्रनुष्ठानविधानम्

॥ द्वादशाक्षरनारायणमन्त्रप्रयोगः ॥

मन्त्रः "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" यह द्वादशाक्षर मन्त्र है ।

अस्य विष्णोर्द्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिः ऋषिः । गायत्री छन्दः । वासुदेवो देवता । धर्मार्थकाममोक्षसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

इस प्रकार विनियोग करके ऋष्यादि न्यास करें ।

ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ वासुदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ नमो तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ भगवते मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कनिष्ठाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ इति करन्यासः ।

एवं हृदयादि नेत्रवर्ज पंचांगन्यास करके इस प्रकार मन्त्रन्यास करें-

मन्त्रन्यासः ॐ नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ नं नमः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ मों नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ भं नमः मुखे ॥ ४ ॥ ॐ गं नमः गले ॥ ५ ॥ ॐ वं नमः बाह्वोः ॥ ६ ॥ ॐ तें नमः हृदये ॥ ७ ॥ ॐ वां नमः कुक्षौ ॥ ८ ॥ ॐ सुं नमः नाभौ ॥ ९ ॥ ॐ दें नमः लिंगे ॥ १० ॥ ॐ वां नमः जानुनोः ॥ ११ ॥ ॐ यं नमः पादयोः ॥ १२ ॥ इति मन्त्रन्यासः ।

मूर्तिपंजरन्यासः ॐ अं केशवाय धात्रे नमः ललाटे ॥ १ ॥ ॐ नं आं नारायणाय अर्यम्णो नमः कुक्षौ ॥ २ ॥ ॐ मां इं माधवाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मित्राय नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ भं ईं गोविन्दाय वरुणाय नमः कंठे ॥ ४ ॥ ॐ गं उं विष्णवे अंशवे नमः कण्ठदक्षपार्श्वे ॥ ५ ॥ ॐ यं ऊं मधुसूदनाय भगाय नमो दक्षिणांसे ॥ ६ ॥ ॐ तें एं त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः दक्षगले ॥ ७ ॥ ॐ वां ऐं वामनाय मित्राय नमः कण्ठवामपार्श्वे ॥ ८ ॥ ॐ सुं ओं श्रीधराय पूष्णे नमः वामांसे ॥ ९ ॥ ॐ दें औं हृषीकेशाय पर्जन्याय नमः वामगले ॥ १० ॥ ॐ वां अं पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः पृष्ठे ॥ ११ ॥ ॐ यं अः दामोदराय विषणवे नमः ककुदि ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः शिरसि ॥ १३ ॥ इति पंजरन्यासः ।

"ॐ किरीटकेयूरहारमकरकुंडलधरशंखचक्रगदांभोज-पीतांबराारश्रीधरवत्सांकितवक्षःस्थलश्रीभूमिसहितआत्मज्योतिर्द्वय-दीप्तकराय सहस्रादित्यतेजसे नमः।" इस मन्त्रसे व्यापक विन्यास

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करके ध्यान करें।

ध्यानम् विष्णुं शारदचंद्रकोटिसदृशं शंखं रथांगं गदा-
मंभोजं दधतं सिताब्जनिलयं कांत्या जगन्मोहनम् ।
आबद्धांगदहारकुण्डलमहामौलिंस्फुरत्कंकणं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रैः स्तुतम् ॥१॥

इस प्रकार ध्यान करके पीठपूजा करें । इसके बाद प्रथम पीठ में पूर्वोक्त मंडूकादि परतत्त्वांत देवताओं की पूजा करें ।

(पूर्वादिषु) ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ (मध्ये) ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥ इति पीठशक्तिपूजा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म-संयोगपद्मपीठात्मने नमः ॥ इससे आसन देकर मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर (अथवा स्वर्णादिनिर्मित यंत्र या प्रतिमा में स्थापना कर) पूर्ववत् पाद्यादि पुष्पांत उपचारों से पुरुषसूक्त से या मूल मन्त्र से पूजाकर आवरण पूजा इस प्रकार करें -

(आग्नेयादिकोणों और दिशाओं में) **ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भगवते शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥**

ये नेत्रवर्ज पञ्चाङ्ग पूजा करके उसके बाहर वाले अष्टदल में पूर्वादिक्रम से पूजा करें।

(पूर्वे) **ॐ वासुदेवाय नमः ॥ १ ॥** (दक्षिणे) **ॐ संकर्षणायै**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः ॥ २ ॥ (पश्चिमे) प्रद्युम्नायै नमः ॥ ३ ॥ (उत्तरे) ॐ अनिरुद्धाय नमः॥ ४ ॥ (अग्निकोणे) ॐ शान्त्यै नमः ॥ ५ ॥ (नैर्ऋत्याम्) ॐ श्रियै नमः ॥ ६ ॥ (वायव्याम्) ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ७ ॥ (ऐशान्याम्) ॐ रत्यै नमः ॥ ८ ॥ (दल के अग्रभाग में) ॐ शङ्खाय नमः ॥ १ ॥ ॐ चक्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ गदायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ पद्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ कौस्तुभाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ मुसलाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ खड्गाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ वनमालायै नमः ॥ ८ ॥ इति पूजा ।

(तद्बहिः देव के अग्रभाग में) ॐ गरुडाय नमः ॥ १ ॥ (दक्षिणे) ॐ शङ्खनिधये नमः ॥ २ ॥ (वामे) ॐ पद्मनिधये नमः ॥ ३ ॥ (पश्चिमे) ॐ ध्वजाय नमः॥ ४ ॥ (अग्निकोणे) ॐ विघ्नाय नमः ॥ ५ ॥ (नैर्ऋत्याम्) ॐ आर्यायै नमः ॥ ६ ॥ (वायव्याम्) ॐ दुर्गायै नमः ॥ ७ ॥ (ऐशान्याम्) ॐ सेनान्यै नमः ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वादशाक्षरनारायणयन्त्रम्

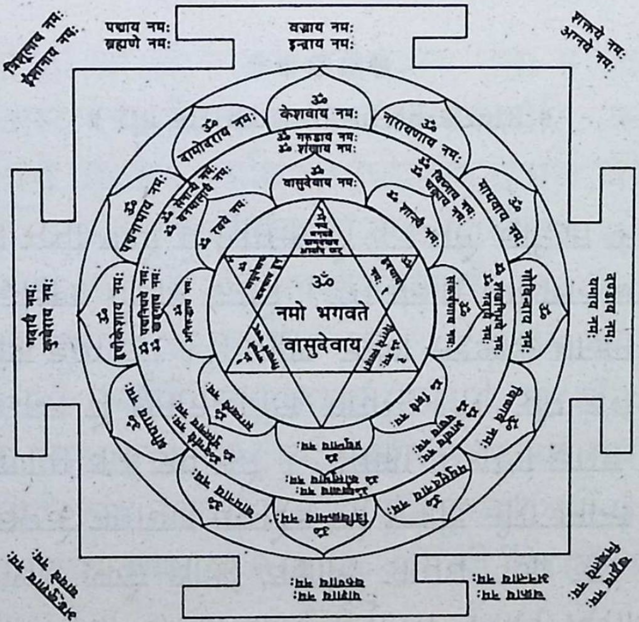

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार पूजा करके बाहर भूपुर में पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि दशदिक्पाल तथा उनके बाहर वज्रादि आयुध पूजा करें । इस प्रकार आवरण पूजा करके नारायण वासुदेव की धूपादि नीराजनान्त पूजाकर स्तुति एवं साष्टांग प्रणाम कर जप करें । इसका पुरश्चरण बारह लाख जप का है । जप के अन्त में घृताक्त तिल, पायस, क्षीर, और द्रुम समिधाओं से दशांश या शतांश होम करे । तद्दशांश तर्पण, तद्दशांश मार्जन तथा तद्दशांश या यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावें । इस प्रकार विधिवत् बारह लाख जप करने से मनुष्य सभी पापों से विमुक्त हो कर मनो वांछित फल प्राप्त करता है ।

॥ इति नारायणवासुदेवमन्त्रपुरश्चरणम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ लक्ष्मीनारायणमन्त्रपुरश्चरणप्रयोगः

मन्त्रः "ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः ॥" चतुर्दशाक्षरमन्त्रः॥

विनियोगः अस्य लक्ष्मीनारायणमन्त्रस्य प्रजापतिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। वासुदेवो देवता। धर्मार्थकाममोक्षसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्री–छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ वासुदेवदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥

करन्यासः ॐ ह्रीं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मी मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ नमः कनिष्ठकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ इति करन्यासः । इसके बाद नेत्रवर्ज हृदयादिपञ्चाङ्गन्यास करें ।

ॐ ह्रीं ह्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ लक्ष्मी शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ नमः अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ हृदयादि पञ्चाङ्ग न्यास करके ध्यान करें।

ध्यानम् विद्युच्चन्द्रनिभं वपुः कमलजा वैकुण्ठयोरेकतां
प्राप्तं स्नेहवशेन रत्नविलसद्भूषाभरालंकृतम् ।
विद्यापंकजदर्पणान्मणिमयं कुम्भं सरोजं गदां
शंखं चक्रममूनि बिभ्रदमितां दिश्याच्छ्रियं वः सदा॥१॥

इस प्रकार ध्यान कर पूर्वोक्त द्वादशाक्षरमन्त्रवत् पीठपूजा व आवरणपूजा कर जप करें। इसका पुरश्चरण चौदह लाख जप का है । जप का दशांश कमल, पायस, मधुराक्त तिलों से होम करने से लक्ष्मीनारायण की अपार कृपा और सर्वकार्य सिद्धि होती है।

॥ इति लक्ष्मीनारायणमन्त्रपुरश्चरणम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ लक्ष्मीकवचम्

लक्ष्मीर्मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः ।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वाङ्गे श्रीस्वरूपिणी ॥ १ ॥
रामपत्नी प्रत्यङ्गे तु सदाऽवतु रमेश्वरी ।
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा ॥ २ ॥
जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा ।
हरिप्रिया हरिरामा जयङ्करी महोदरी ॥ ३ ॥
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनो मोहिनी ।
जयङ्करी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभङ्करी ॥ ४ ॥
सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी ।
भयं हरेत्सदा पायाद् भवबन्धाद् विमाचयेत् ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कवचं तु महापुण्यं यः पठेद् भक्तिसंयुतः ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसङ्कटात् ॥ ६ ॥
पठनं कवचस्यास्य पुत्रधनविवर्द्धनम् ।
भीतेर्विनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम् ॥ ७ ॥
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचना कुङ्कमेन तु ।
धारणाद् गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥ ८ ॥
अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः ॥ ९ ॥
गर्भिणी लभते पुत्रं वन्ध्या च गर्भिणी भवेत् ।
धारयेद् यदि कण्ठे च ह्यथवा वामबाहुके ॥ १० ॥
यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद्भवेत् ।
मृत्युर्व्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन्महीतले ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि शृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
सर्वपापविमुक्तस्तु लभते परमां गतिम् ॥ १२ ॥
विपदि संकटे घोरे तथा च गहने वने ।
राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ॥ १३ ॥
पठनाद्धारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम् ।
अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं शृणुयादपि ।
सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्कं यशस्विनम् ॥ १४ ॥
शृणुयाद्यः शुद्धबुद्ध्या द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वबन्धाद् विमुच्यते ॥ १५ ॥
मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं शृणुयाद्यदि ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत पठनान् मासमध्यतः ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिखित्वा भूर्जपत्रे च ह्यथवा ताडपत्रके ।
स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥ १७ ॥
शृणुयाद् धारयेद् वापि पठेद्वा पाठयेदपि ।
यः पुमान् सततं तस्मिन् प्रसन्ना सर्वदेवता ॥ १८ ॥
बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी ।
आद्याशक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानुग्रहकारिणी ।
धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥ १९ ॥

॥ श्रीमहाकालविरचितं लक्ष्मीकवचं संपूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सद्यः फलदा लक्ष्मीस्तवहृदयम्

श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् ।
सर्वकामफलावाप्ति - साधनैकसुखावहाम् ॥ १ ॥
श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः ।
नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्यावलोकय ॥ २ ॥
सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं समागच्छ सन्निधिम् ।
वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ॥ ३ ॥
श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते ।
विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षीराब्धिसंस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे ।
त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोकय ॥ ५ ॥
रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्ण हिरणमयि ।
समागच्छ समागच्छ स्थित्वा सुपुरतो मम ॥ ६ ॥
स्थिराभव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले ।
प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्ना वरदा भव ॥ ७ ॥
श्रीधरे श्रीमहाभूमे त्वदन्तस्थ महानिधिम् ।
शीघ्रमुदधृत्य पुरतः प्रदर्शय समर्पय ॥ ८ ॥
वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्धे कृपामयि ।
त्वत्कुक्षिगतं सर्वस्वं सत्वरं मे प्रदर्शय ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे ।
त्वद्गर्भगत हेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय ॥ १० ॥
अत्रोपविश्य लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्मयि ।
सुस्थिरा भव सप्रीत्या प्रसन्नवरदा भव ॥ ११ ॥
सादरे मस्तके हस्तं मम तव कृपयार्पय ।
सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥ १२ ॥
यथा वैकुण्ठनगरे यथैव क्षीरसागरे ।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह ॥ १३ ॥
आद्यादिमहालक्ष्मि विष्णुवामाङ्कसंस्थिते ।
प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समागच्छ महालक्ष्मि धनधान्यसमन्विते ।
प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ॥ १५ ॥
दया सुदृष्टिं कुरुतां मयि श्रीः।
सुवर्णवृष्टिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥ १६ ॥
महालक्ष्मीः समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे।
इदं श्रीहृदयं जप्त्वा शतवारं धनी भवेत् ॥

॥ सद्यः फलदा श्रीलक्ष्मीस्तवहृदयं सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री लक्ष्मी जी के १०८ नाम

१. श्री आद्यलक्ष्म्यै नमः
२. श्री विद्यालक्ष्म्यै नमः
३. श्री योगलक्ष्म्यै नमः
४. श्री गृहलक्ष्म्यै नमः
५. श्री राजलक्ष्म्यै नमः
६. श्री अमृतलक्ष्म्यै नमः
७. श्री सत्यलक्ष्म्यै नमः
८. श्री विजयलक्ष्म्यै नमः
९. श्री गजलक्ष्म्यै नमः
१०. श्री धनलक्ष्म्यै नमः
११. श्री ऐश्वर्यलक्ष्म्यै नमः
१२. श्री सान्तनलक्ष्म्यै नमः
१३. श्री भाग्यलक्ष्म्यै नमः
१४. श्री धान्यलक्ष्म्यै नमः
१५. श्री वीरलक्ष्म्यै नमः
१६. श्री मोक्षलक्ष्म्यै नमः
१७. श्री महालक्ष्म्यै नमः
१८. श्री सत्वायै नमः
१९. श्री शान्तायै नमः
२०. श्री व्यापिन्यै नमः
२१. श्री व्योमनिलयायै नमः
२२. श्री परमानन्दरूपिण्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२३. श्री नित्यशुद्धायै नमः
२४. श्री नित्यतृक्षायै नमः
२५. श्री निर्विकारायै नमः
२६. श्री ज्ञानशक्त्यै नमः
२७. श्री कर्तृशक्त्यै नमः
२८. श्री निरानन्दायै नमः
२९. श्री विमलायै नमः
३०. श्री अनन्तायै नमः
३१. श्री वैष्णव्यै नमः
३२. श्री सनातन्यै नमः
३३. श्री निरामयायै नमः
३४. श्री विश्वानन्दायै नमः
३५. श्री ज्ञानज्ञेयायै नमः
३६. श्री ज्ञानगम्यायै नमः
३७. श्री ज्ञानज्ञेयविकासिन्यै नमः
३८. श्री निर्मलायै नमः
३९. श्री स्वरूपायै नमः
४०. श्री अकलंकायै नमः
४१. श्री निराधरायै नमः
४२. श्री निराश्रयायै नमः
४३. श्री निर्विकल्पायै नमः
४४. श्री पावनीकरायै नमः
४५. श्री अपरिमितायै नमः
४६. श्रीभवभ्रान्तीविनाशिन्यै नमः
४७. श्री महाधाम्यै नमः
४८. श्री श्रीवृद्ध्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४९. श्री ईश्वर्यै नमः
५०. श्री अक्षयायै नमः
५१. श्री अप्रमेयायै नमः
५२. श्री सूक्ष्मापरायै नमः
५३. श्री निर्वाणदायिन्यै नमः
५४. श्री शुद्धविद्यायै नमः
५५. श्री तुष्ट्यै नमः
५६. श्री महाधीरायै नमः
५७. श्री अनुग्रहशक्तिराधायै नमः
५८. श्री जगज्ज्येष्ठायै नमः
५९. श्री ब्रह्माण्डवासिन्यै नमः
६०. श्री अनन्तरुपायै नमः
६१. श्री अनन्तसम्भवायै नमः
६२. श्री अनन्तस्थायै नमः
६३. श्री महाशक्त्यै नमः
६४. श्री प्राणशक्त्यै नमः
६५. श्री प्राणदात्र्यै नमः
६६. श्री महासमूहायै नमः
६७. श्रीसर्वाभिलाषपूर्णेच्छायै नमः
६८. श्री शब्दपूर्वायै नमः
६९. श्री व्यक्ताव्यक्तायै नमः
७०. श्री संकल्पसिद्धायै नमः
७१. श्री तत्वगर्भायै नमः
७२. श्री चित्स्वरूपायै नमः
७३. श्री महामायायै नमः
७४. श्री योगमायायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७५. श्री महायोगीश्वर्यै नमः
७६. श्री योगसिद्धिदायिन्यै नमः
७७. श्री महायोगेश्वरवृतायै नमः
७८. श्री योगेश्वरप्रियायै नमः
७९. श्री ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमितायै नमः
८०. श्री गौर्यै नमः
८१. श्री विश्वरूपायै नमः
८२. श्री विश्वमात्रे नमः
८३. श्री श्रीविद्यायै नमः
८४. श्री महानारायण्यै नमः
८५. श्री पिंगलायै नमः
८६. श्री विष्णुवल्लभायै नमः
८७. श्री योगरतायै नमः
८८. श्री भक्तानांपरिरक्षिण्यै नमः
८९. श्री पूर्णचन्द्रभायै नमः
९०. श्री भयनाशिन्यै नमः
९१. श्री दैत्यदानवमर्द्दिन्यै नमः
९२. श्री इडायै नमः
९३. श्री व्योम लक्ष्म्यै नमः
९४. श्री तेजोलक्ष्म्यै नमः
९५. श्री रसलक्ष्म्यै नमः
९६. श्री जगद्योन्यै नमः
९७. श्री गन्धालक्ष्म्यै नमः
९८. श्री अनाहतायै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९९. श्री सुषुम्नायै नमः
१००. श्री कुण्डलिन्यै नमः
१०१. श्रीसर्वमंगलमांगल्यायै नमः
१०२. श्री सोम्यरूपायै नमः
१०३. श्री महादीप्तायै नमः
१०४. श्री मूलप्रकृत्यै नमः
१०५. श्री सर्वस्वरूपिण्यै नमः
१०६. श्रीमणिपूरचक्रनिवासिन्यै नमः
१०७. श्री शिवायै नमः
१०८. श्री योगमात्रे नमः

॥ श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशतनाम सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

श्रीमन्नारायण के १०८ नाम

१. ॐ आदित्याय नमः
२. ॐ अमरप्रभवे नमः
३. ॐ अमृताय नमः
४. ॐ अमृतांशाय नमः
५. ॐ अमृत्यवेनमः
६. ॐ अमूर्त्यै नमः
७. ॐ आनन्दाय नमः
८. ॐ अनन्ताय नमः
९. ॐ अनन्तजिते नमः
१०. ॐ अनन्तराजे नमः
११. ॐ अनिलाय नमः
१२. ॐ अपराजिताय नमः
१३. ॐ अप्रमेयाय नमः
१४. ॐ अरविन्दाक्षाय नमः
१५. ॐ आत्मवते नमः
१६. ॐ अव्ययाय नमः
१७. ॐ भगवते नमः
१८. ॐ भावनाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१९. ॐ भूतकृते नमः
२०. ॐ भूतात्मने नमः
२१. ॐ ब्रह्मकृते नमः
२२. ॐ ब्रह्मणे नमः
२३. ॐ ब्रह्मविदे नमः
२४. ॐ भक्तवत्सलाय नमः
२५. ॐ चक्रिणे नमः
२६. ॐ चतुर्भुजाय नमः
२७. ॐ देवाय नमः
२८. ॐ देवेशाय नमः
२९. ॐ धन्याय नमः
३०. ॐ धरणीधराय नमः
३१. ॐ धर्माय नमः
३२. ॐ धात्रे नमः
३३. ॐ दिशे नमः
३४. ॐ एकाय नमः
३५. ॐ गदाधराय नमः
३६. ॐ ज्ञानेश्वराय नमः
३७. ॐ गोविन्दाय नमः
३८. ॐ गुरवे नमः
३९. ॐ गुरुतमाय नमः
४०. ॐ हरये नमः
४१. ॐ ईशानाय नमः
४२. ॐ इष्टाय नमः
४३. ॐ ईश्वराय नमः
४४. ॐ जननाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४५. ॐ जनार्दनाय नमः
४६. ॐ जीवनाय नमः
४७. ॐ ज्येष्ठाय नमः
४८. ॐ ज्योतिषे नमः
४९. ॐ कामदेवाय नमः
५०. ॐ केशवाय नमः
५१. ॐ कृष्णाय नमः
५२. ॐ लोकनाथाय नमः
५३. ॐ माधवाय नमः
५४. ॐ महामायाय नमः
५५. ॐ महेन्द्राय नमः
५६. ॐ महेष्वासाय नमः
५७. ॐ मनोहराय नमः
५८. ॐ मन्त्राय नमः
५९. ॐ नायकाय नमः
६०. ॐ नन्दाय नमः
६१. ॐ नारायणाय नमः
६२. ॐ पद्मनाभाय नमः
६३. ॐ पद्मिन्याय नमः
६४. ॐ पापनाशनाय नमः
६५. ॐ परमात्माय नमः
६६. ॐ परमेश्वराय नमः
६७. ॐ पावनाय नमः
६८. ॐ पवित्राय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६९. ॐ प्रभवे नमः
७०. ॐ प्रजाभावाय नमः
७१. ॐ प्रजापतये नमः
७२. ॐ प्राणाय नमः
७३. ॐ प्राणदाय नमः
७४. ॐ प्रतर्दनाय नमः
७५. ॐ पुरुषाय नमः
७६. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
७७. ॐ रक्षणाय नमः
७८. ॐ रुद्राय नमः
७९. ॐ सन्निवासाय नमः
८०. ॐ सर्वस्मै नमः
८१. ॐ सर्वदर्शिने नमः
८२. ॐ सर्वज्ञाय नमः
८३. ॐ शान्तिदाय नमः
८४. ॐ शरणाय नमः
८५. ॐ शर्वाय नमः
८६. ॐ शाश्वताय नमः
८७. ॐ शत्रुघ्नाय नमः
८८. ॐ शोकनाशनाय नमः
८९. ॐ शुचये नमः
९०. ॐ स्कन्दाय नमः
९१. ॐ सुखदाय नमः
९२. ॐ सुन्दराय नमः
९३. ॐ सुमेधाय नमः
९४. ॐ सुरारिघ्ने नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९५. ॐ सुरेश्वराय नमः
९६. ॐ सुतपसे नमः
९७. ॐ ताराय नमः
९८. ॐ त्रिलोकेशाय नमः
९९. ॐ उत्तारणाय नमः
१००. ॐ वरदाय नमः
१०१. ॐ वरुणाय नमः
१०२. ॐ वसुमनसे नमः
१०३. ॐ एकात्मने नमः
१०४. ॐ विश्वकर्मणे नमः
१०५. ॐ विश्वस्मै नमः
१०६. ॐ विश्वात्माय नमः
१०७. ॐ वृक्षाय नमः
१०८. ॐ योगेशाय नमः

॥ श्रीविष्णु अष्टोत्तरशतनाम सम्पूर्णम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीलक्ष्मीनारायण जी की आरती

जय लक्ष्मी-विष्णो, जय लक्ष्मी-विष्णो ।
ब्रह्मादि सुर सेवित, जय लक्ष्मी-विष्णो ॥ जय.....॥
जय चम्पा समवर्णे, जय नीरद-कान्ते ।
जय मन्दस्मितशोभे, जय अद्भुत शान्ते ॥ जय.....॥
कमल वराभय हस्ते, शंखादिकधारिन् ।
जय कमलालयवासिनि, गरुडासनचारिन् ॥ जय.....॥
सच्चिन्मयकरचरणे, सच्चिन्मयमूर्ते ।
दिव्यानन्दविलासिनि, जय सुखमय मूर्ते ॥ जय.....॥
तुम त्रिभुवन की माता, तुम सबके त्राता ।
तुम लोकत्रय जननी, तुम सबके धाता ॥ जय.....॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम धन जन सुख संतति, जय देने वाली ।
परमानन्द विधाता, तुम हो वनमाली ॥ जय.....॥
तुम हो सुमति घरों में, तुम सबके स्वामी ।
चेतन और अचेतन, के अन्तर्यामी ॥ जय.....॥
शरणागत हूँ मुझ पर कृपा करो माता ।
जय लक्ष्मीनारायण, नव मंगल दाता ॥ जय.....॥

॥ आरती संपूर्णा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजा सामग्री

रोली	सिन्दूर	ऋतुफल	घृत	पञ्चपल्लव
मौली	सरसों पीली	पुष्प	गुग्गुल	सप्तमृत्तिका
हल्दी	मिश्री	पुष्पमाला	भोजपत्र	समिधाआम,पीपल
मेंहदी	पंचमेवा	बिल्वपत्र	कमलगट्टा	देववस्त्रादि
अबीर	मधु	दूर्वा	जायफल	शृंगार सामग्री
अभ्रक	चन्दन	कुशा	पंचमेवा	लक्ष्मीनारायणप्रतिमा
सुपारी	यज्ञोपवीत	तुलसी	चन्दनचूरा	कलश
कर्पूर	रूई	गंगाजल	अगर	दीपक
लवंग	दियासलाई	तिल	तगर	चौकी
इलायची	नारियल	चावल	नागरमोथा	वरण सामग्री
केशर	नैवेद्य	जौ	सर्वौषधि	ऊर्णासन
इत्र	पान	शर्करा	पंचामृत	

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीशुक्लयजुर्वेदीय मंत्रसंहिता

जन्म से मरणपर्यन्त कर्मकाण्ड के क्रिया कलाप में वेद मंत्रों का ही प्रयोग होता है। यजुर्वेद में वर्णित दिन-प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले ५२५ मंत्रों के अभ्यास से कर्मकाण्डी वेदपाठी पुण्याह्वाचन, नवग्रह, षोडशमातृका, नित्यहोम, देव पूजन, अरणिमन्थन, यज्ञ यागादि अनुष्ठान विधि विधानपूर्वक सुगमता से पूर्ण करा सकते हैं। परिशिष्ट में जटादि विकृत्तियां के उदाहरण लक्षण प्रतीक रूप में दिये हैं। कर्मकाण्डी वैदिकों के लिए परम उपयोगी रचना है।

मूल्य: रु. ५१.०० डाक व्यय अलग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंत्र रामायण

मनुष्य की सफलता में विपत्तियां सहायक होती हैं। अधिकांश लोग इनसे भयभीत हो जाते हैं। यह उनकी मानसिक दुर्बलता का परिचायक है। विपत्तियों से टक्कर लेने के लिए सबल मानसिक शक्ति की आवश्यकता है। इसका सशक्त उपाय मंत्र शक्ति है।

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस के दोहे-चौपाई मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक पुस्तक में भक्तप्रिय पारसनाथ जी ने किया है। इन मंत्रों का रामायण के साथ सम्पुट लगाकर पाठ करने से हर मनोकामना अवश्य पूरी होती है। आप भी लाभ उठाइये।

दसवां संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हिन्दी पंचांग तिथि निर्णय™ (बहुरंगी) एवम् पंडित पंचांग (दो रंगों में छपा)

दोनों ही पंचांग अधिक उपयोगी सामग्री के साथ प्रस्तुत हैं।

❀ मुख्यत: तारीख ❀ तिथि का समय कब से कब तक ❀ विक्रम-शाका व राष्ट्रीय सम्वत् ❀ अमुक व्रत, त्यौहार, कथा– कब और कैसे मनायें ❀ छुट्टियाँ ❀ नक्षत्र-राशि प्रवेश ❀ प्रत्येक दिन की चन्द्र स्थिति ❀ चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त ❀ विवाह आदि मुहूर्त्त ❀ पंचक ❀ मूल ❀ भद्रा ❀ शुभ-अशुभ योग ❀ सूर्य-चन्द्र ग्रहण, कुम्भ की जानकारी ❀ ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र-तंत्र उपाय ❀ राशि ज्ञान-फल, शुभ वार, शुभ रंग, शुभ अंक सहित ❀ राशि रत्न धारण विधि ❀ दिन-रात का चौघड़िया ❀ पन्द्रह के यंत्र से शुभ-अशुभ ज्ञान ❀ लाभ-हानि चक्र ❀ राहु (नेष्ट) काल-किस समय शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ❀ अभिजित काल-अमुक दिन शुभ मुहूर्त्त न होने पर भी शुभ कार्य कब करें ❀ दिशाशूल दोष परिहार-यात्रा के दिन दिशाशूल होने पर भी यात्रा दिशाशूल दोष दूर कर कैसे करें ❀ दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक ❀ मौसम ❀ तेजी-मंदी/मार्किट रुख ❀ विश्व घटना चक्र ❀ देवी-देवताओं के बहुरंगी चित्र व उनके जपनीय मंत्र ❀ गीतासार ❀ भगवान राधा-कृष्ण की लीला स्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिरों में मनाये जाने वाले विशेष पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि उपयोगी सामग्री से सुसज्जित हैं।

साईज 28 × 44 से० मी०   पृष्ठ संख्या 26   मूल्य : रु. २५.०० / : रु. १५.००

सन् १८९९ पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

प्रकाशक : पूजा-पाठ व धार्मिक पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६   दूरभाष : २३ २७ ५३ ४४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection